मालचन्द तिवाड़ी

प्रकाशकाधीन
पैलो संस्करण 1986
मोल-पच्चीस रिपिया
प्रकाशक
राजस्थानी विभाग,
राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति,
श्रीडूंगरगढ़ (राज.)
मुद्रक
सांखला प्रिण्टर्स बीकानेर

Dharand (Novel) by Mal chand Tiwari

घण हेताळू
मदन सैनी
अर
सत्यनारायण योगी
सारू

धड़न्द

"ह/ ह/ ह/ ह/ ह   ।"

जाणै लगोलग तोप रा गोला छूटया हुवै। काना र मारग अट्टहास काई उतरघा क लोगा रा काळजा ठोड छोड दीवी। टाबरा चिरळाटी मारी। अट्टहास थम्यो। घूजणी थमता पण ताळ लागी। केई आपरी ठोड उभा ई हुयग्या। बैठती वेळा लत्ता री ख भाड लीवी। गडद रो अेक बादळ उठयो अर विडग्यो।

अणछक माईक रै मुहड वा ई हँसी अर हँसी लारै दड़ूकता बोल "मदोदरी! थू नी जाणै! म्हारो नाव रावण है, महाबली रावण! रावण, जको देवतावा तकात रै नींबू नीचो मेल्यो है ह ह" (माफी दिरावज्यो, म्हारै अठ री रामलीला रा सवाद–लेखक मुहावरादार भासा न की अणूती ई आदर)।

अबक लाग दर ई नीं डरिया, पण केई जका पलक सूता ई रैयग्या हा, हडबडावता जागग्या। उचक उचकन देख्यो। काई हुयग्या। रामलीला म अडी अचेरी हूसी कुण हँस्या! झगडो तो नी हुयग्या। उपरल बास रा टीगर आवेस कुवदी!

लागा रो अ दाज माचा। वे रावण न ओळख ई लियो। बीकानेर रा लाला म्हाराज। वान टाळ मच माथ अडा पग कुण पटक सक । देखणिया

री छे'ली पात तकात न धरती धूजती लखाव। हँसी री तो बात ई न्यारी । बोल तो गळ सू जाण तोप रा गोळा ई छूट–मदा दरी ह ह ह!

लाला म्हाराज न आळखत ई लोग चेळक हुयग्या। "वा सा, वा! अबकै मजा आयग्यो। लाला म्हाराज। रामलीला मे ज रावण ई ढग री नी हुवै, तो राम बापड अकल सू किसी रामलीला चलाइजै। धूड अडी रामलीला न!"

म्हारै आग बठयो अेक जणो भोळे भोळे ई ओ गूढ ज्ञान परगास न्हाख्यो।

मच माथ मदादरी बिलाप सरू हुयग्यो। रावण उणन कळपता छाड र अशोक वाटिका सारू बहीर हुयग्या दीस हो।

बिलाप कँडो ई हुवै, गाया टाळ जम ई नी। मच र लागते पाट पर बैठयो ढोलकियो थाप दीवी। पटीवाळ सुर गुजाया। झिझ्या बाजी। गवयो गळो खाल्या। मदादरी रो फकत अभिनय।

अणछक सज्जनकुमार मच माथ पूग्यो। काध धनुस बाण नी हा। तो काई हुयो, देखणिया वीन दस बरस सू आळख। आ ई तो राम रो पाट खेल। आज राम सादी बरदी मे माईक पकड्यो। ढोलकियो जोर री थाप दीवी। पेटी सात। गवयो चुप।

'हा तो साभबान कदरदान!" सज्जनकुमार माईक मे बोलतो सुणीज्यो "भगत अर भगवान री ज हो। रावण रै पाट सू खुश हुय'र तमकीमलजी सिंधी पाच रिपिया भेंट कर। बोल सियावर रामचन्द्र की जै।"

"ज" र समच माईक पर ढोलक री थाप सुणीजी।

घडद।

मदोदरी बिलाप पाछो सरू हुयो।

पाछो बद हुयग्यो।

सज्जनकुमार माईक पर, "(घडद)" सेठ सात्र पतूमलजी कानी सू इगयार रिपिया सप्रेम भेंट । बोल सिया

अर इणी समच तुळ माचग्यो । लोग मच कानीं सू मुहडो मोड लियो । डाव पास भीड इण भात ऊछरी जाण पगा मे साप आयग्यो हुव । सदाबहार स्वयसेवक भाज्या (अ सदाबहार स्वयसेवक हरेक छोट बडे से'र मे मौजूद रेवै जका बिना बकारिया ई आपर कारण हाजर हूय जाव) स्वयसेवका र हाथा मे डडा फटकारता व मौका ए वारदात मायै पूग्या ।

साप नी हो । कु दण हरिजन हो । देखणिया ता पला ई ओळख लियो । ओ चाव काई हो ?

"छोडो, छोडो म्हारा हाथ !" स्वयसेवका री पकड मे आयोडो मडक्लो सा कु दण बाइटा लेवै हो ।

'बठ जा बोलोबाला ।" नामी पिण्डत जेठमल की आतर स् बीन फटकार हा ।

अठीन मच मायै सज्जनकुमार अर मदोदरी दोवू डाफाचूक हुयग्या । आ अणछक नूवी रामायण किया सरू हुयगी । ढोलकियै रा हाथ ढोलक रै चिपग्या । पेटी री हवा नीसरगी । गवयो गावणो बिसरग्यो ।

लोगा न कु दण र अभिनय मे की तत नी लाग्यो । उभा हुयोडा पाछा बठण ढूकग्या । स्वयसेवका बीन की ताळ पकड र राख्यो । सेवट व ई बीन धक्का त्यअळगो करयो । चोट खायोडै मकोडै री गळाई कु दण पाछो चाल्या । स्वयसेवका र नजीक पूगता गू जे म हाथ घाल्यो । पाछो काढयो तो मुट्ठी मे रिपिया । स्वयसेवका इचरज करयो । पण इचरज ता अजेस बाकी हो । दस दस रा दोय लोट अर जेक लोट रिपिय रो अळगो करन कु दण वार आगे करियो ।

'लेय जावो !" वा झरू टिया भरतो सीक बोल्यो 'इण फतिय सेठ री तो मा केय दा कु दण हरिजन कानी सू रामलीला मडली न इग्यारै री ठौड इक्कीस रिपिया भेंट !"

बोलण रै समच देसी दारू रो नी झल जेडो भभको जेठमल पिण्डत

रा नास्या लग पूगग्यो । नाक माथ हथाळी देवता वी अेक ओपती गाळ ठरकाई अर किणी स्वयंसेवक रा चलायोड़ा रिपिया चाल्या ।

रिपिया मंच माथै आयग्या । सज्जनकुमार गळो खखारयो । फेरू, "धडद तो भणता ! भाई कुंदणमल हरिजन चौकीदार बालिका स्कूल कानी सूं सती मदोदरी र नाव इक्कीस रिपिया घणमान भेंट । बोल सियावर रामचन्द्र की ज ।" धडद !

"इक्कीस रिपिया की ऊंचा ई बोल्या अर छेली धडद रै पछै दूज ई बोलग्यो, "इक्की स रिपिया ।"

सागी ठौड । वो ईज कौतक । लोगा मुड़नै देख्यो–कुंदण आपरी ठौड उभो हो हो हंस्यो अर हंसतो-हंसतो इं नाचण ढूकग्यो । स्वयंसेवक नजीक ई हा । झट पूगग्या । कुंदण नै ओनाड र बैठायो । अेडी खुशी रो ओ तिरस्कार । कुंदण तो आपर लेखै दिल्ली ई जीत लीवी ही । स्वयं सेवक काला नी हुव । अडी बाता वारा हिया थोडो ई पसीज ।

मदोदरी रो बिलाप नीठ सागी चाक आयो । देखणिया रो मन ई रमण लागग्यो । सज्जनकुमार आपर थान मुकाम पूगग्यो । मंच र अेक कानी बस कनात म छोड्योडी बारी । दानावा रा नाव अर नाणा इणी मारग पूग । मच माथ आज राम रो काम नी हो । धनुस बाण मंच लार खूंटी लटक हा । राम इण घणमोल मोर्चै माथ हो ।

दडाछट च्यार दानी पूग्या । सज्जनकुमार नाणा हाथ मे ल्या । नाव पूछ्या । अेक गुप्त दान ई हो । गुप्त दान सू सज्जनकुमार घणो राजी । दान तो गुप्ताऊ ई ऊंचो । मदी म चाव जित्ता गुप्त दान ई बोलीज सकै । जोस चढावण री कारीगरी सज्जनकुमार र हाथवसू । पण आज की दरकार नी । आज मदी नी है ।

'हं' ! काई ? इक्यावन रिपिया ' ' मारणै गांव री गळाई अेक जणो बारी सू भचभेडी लीवी । सज्जनकुमार लुळग्यो । दरसण करिया । कुण केव कै राजा करण मरग्या !

'हा हा इक्यावन रिपिया ई !" दानवीर न रीस आयगी, इण

कुदणिय री आ औकात कीकर हुयगी ? घर री लुगाया तो मुलक रो नरकवाडो ढोव अर लाटसाब म्हारै सामी पाळो माडे । देखू, कित्ती'क ताळ !"

दानवीर री बात सौ टच । कच्चा पायखाना रो चलण अजेस उठया थोडो ई है । मिनख रो हग्योडो मिनख उठाय सकै । इणसू वत्ती आजादी काई हुय सक । गाधी बाब री अहिसा अर सरणुता रा महातम निवड ई सक । कुदण र ओळावै दानवीर र मुहडै साच री धजा फरूकी । रामलीला म रामराज रा सपनो साचो हुयो ।

सज्जनकुमार नी दब सक्यो । आधडतो मच माथ पूग्यो । लगोलग धडदा बाज्या । पण राज करण रो नाव इत्तो नी हो । उणर गुण गान मे पूजता लटका नी कर, तो सज्जनकुमार री कळा र माजनै धूड । खखारा करिया । दोहा पढिया । । दानवीर रा दियाडा नाणा न चिमटी मे पकडर भण्डी रै उनमान हिलावतो थका लागा न दिखाया दो धडदा पछ वीरी वाणी माईक म गूजी, "भगत बडो क भगवान ! ज हो भगतराज री ! तो मातावा अर बना, बूढा अर जुवाना गोरा अर काळा काळजो काठो राखन सुणज्यो । आपर गाव रा नामी गिरामी सेठ साब श्री फत्तूमलजी रामलीला रा लूठा पारखी है, आप गुणी है अर गुण री कदर करणो जाण अर सती मदोदरी र पाट सारू मडली न इक्यावन हा सा इक्यावन रिपिया भेंट कर । बोल सियावर रामच द्र की ज ।" धडद ! धडद !! धडद !!!

तीजो धडदो बाज्यो नी बाज्यो, सागी ठौड चाळा हुयग्यो । अबक लोगा दर ई गिनरथ नी करी । ठौड बठया हिलया ई नी । स्वयसेवक आपरो फरज नी बिसरायो हो । सावचेत हुयग्या कुदण री याददाश्त नस र जोर जबरी हुयगी । बिसरायोडी गाळया ई वीर कठा आय विराजगी । दारू र भभका सेठ साब रै कड्डब रो कादो किचोय हाल्यो । अेक हरो करस लाट काढन बगायो । स्वयसेवक सावचेत तो हा ई, वीनै हठो नी पडन दियो । कुदण नीठ बठयो । व मच कानी मुहडो कर्‌यो ।

मदोदरी पाट भूलगी । ढोलकियो थाप दीवी, तो हथाली ढोलक र

काळजै लग पूगगो । वो तुरत तावक्यो अर खूटी पर गू दूजो ढोलक उतार लायो ।

धड़द ! धड़द !!

"हां तो साथवाना-कदरदाना !" सज्जनकुमार न कीं उधार थाड़ो ई लावणो हो । पण मन म वा ई जाणग्यो हुयला कै आज उणरो अग्नि परीक्षा है । पार उतर्‌यां रामलीला रा मनजर साव अवस कीं करला। वगमीम री बोतल रो अेक गुटक। कल्पना म गटकावतो वो सरू हुयग्यो। धड़द, धड़द अर धड़द !

मदोदरी मच माथ नी ढब तो ई कीं नी । पेटीवाळो अर गवैया ई जावो भला ई । सज्जनकुमार अर ढोलकियो, दो ई मोकळा । रामलीला आज मुगत हुयगी ही ।

पण किती ताळ !

फत्तूमलजी मसखरी नीं करी ही । लप अेक तिणखा रो ओ सिरकाऊ चौकीदार काई खायन वार आग टिक सकतो ! मकोड़ो गुड़ री भेली साग वायद आथड़ ।

फत्तूमलजी री नगदावण तो इक्यावन रै माळ ई निवड़गी ही । वारो साख पण अनाथ ही । रामलीला वाळा किसा ओळख नी ! इणर जोर एक सौ एक री पिटाई रो जवाब व दो सौ एक री थप्पड़ सू ई दियो । माजन बायरो कुदण फर ई नीं मा"यो । दारू आदमी नै आदमी नी रैवण दै । लखणा मर चीरो फत्तूमलजी काई कर ! सवट आखता हुयग्या । नीचा लुळनै आठ दस काकरिया चुगी अर सज्जनकुमार न ताकीद करता मच माथ बगाय दीवी, 'काकरी दीठ सौ रा लोट जाण इण हरामी री अटो री करड़ावण ढीली नी हुव जित्त बोल्या जाव ! दिनुग हवेली आयन काकरी दीठ रिपिया गिणाय लीवो !"

सज्जनकुमार मुजरो कर काकरिया चुगण लागग्यो । पछ कुदण री जब रा दा फाड़ हुवता किती क जेज लागती ! धड़द-धड़द ! आटा-चित्त !

मदोदरी परसेव सू काठी भीजगी । ढोलकिय रो मुर्चो टूटग्यो ।

मनेजर साब मच माथै आय पूग्या । आगल दीठाव सारू त्यार हुयोड़ा लाला म्हाराज रावण र भेस अणचाइजता ई वार लार मच माथै चढग्या ।

कुंदण पूर फाड लिया । फेर ई की हाथ नी आयो, तो नीचो लुळन अेक धोबो धूड रो भरयो अर मच कानी उछाल न्हाख्यो । मच रो की नी बिगडयो पण लोगा रो आरया बुरीजगो । स्वयसेवका रो धीरज छूटग्यो । डडा पटकारता ताचक'र पढधा सो कुंदण नै गोरै री सीवा सू मासा मळगो टिपायनै ई सांस लियो ।

आरती रा थाळ सजग्या ।

राम, रावण, सीता, मदोदरी, लछमण, भरत, सत्रुघ्न अर हनुमान रळ मिळ'र फत्तूमलजी न ऊचा उखण लिया । जकारा सागै मच माथ लाय उतारया । राम दरबार सज्यो । आरती हुयी । फत्तूमलजी सारू मुढा मगाइज्यो । मइली रै निजू कमरै फोटू ई लिरीजी । देखणिया सीवा तोड मच रै ऐन नजीक पूगग्या ।

इणी टम कुंदण अेक अधारी गळी बुतिया मुसावतो टिप्पा खावतो भाजतो सीक लधे हो । धणकरो नसो तो स्वयसेवका उतार हाख्यो हो, पण धूजणी अजेस बाकी ही । अणछक आथडग्यो सो पडधा ई सरियो । पडती वेळा खीस म लुकोयोडी बोतल गडगी । भलेस गडी । आधी म इत्तो चमत्कार ई किसो मू घो हो । आधी और गटकायन आरया मीच लीवी ।

दिनुग वीरी घरवाळी म्हार कन ई आय ढूकी । मैं इण बास रो, जकै म रामलीला पडै, माजन बायरो वाड मेम्बर । आख मीचण सू लयन बरामद हुवण ताई कुंदण रा भूडा हाल बखाण्या पछ वा बोली, "काल ई तिणाखा मिळी । घर तो पीणा म ऊदरा थडी कर । आप सीधा ठेकै पूगग्या । जीव रा भोळा है । काई ठा किण पापी सिल्ल चढाय दिया, नीतर इत्ती तो जाण ई है क सेठा सागै आपा कारू कमीण किण तरै सक सका ? भाखरा आग भाटा री किसी औकात ! फेर नसो की सोचण देवतो ता सोचता'क !

नसो ! आध न ई दीसै जेडी बात, कै इण सत्यानास रो बीज नसो ई हो पण नसै म कुंदण अेकलो ई नी हा । रामलीला मे मौजूद अेकोअेक

जणा ठावा नसेडी लसाया मन । सैगां गू गिरे सेठ परसूमलजी हा । नमो ई औसान साह हुया पर । आप आप रो रगो ।

सेवट कु दण री घरवाली रोवण ढूकी । मैं वीन लय'र रामलीला रा मनेजर साब आगै हाजर हुयो । सगळी बात सुणनै वैं पौ ताळ चुपचाप बठा रया । फेर साबठी धीरजाई साग बोल्या, 'आप साग पधारिया इण कारण हाथ रा उत्तर दिया टाळ मन नी मान । नींतर आप ई जाणा क जुए म हारयोडो धन पाछो नी मिळिया कर ।

लुगी र लपट सू य लोटा रो बदल काडया अर तीन दस रा मुडिया तुडिया लोट पुग'र कु दण री घरवाळी रै आग बगाय दिया बस और म्हार कन की नी है !"

घडद !

ढोलकियो नेडो आगो ई नी दीस्यो । फेर ओ घडदो यठै बाज्यो ? कु दण री घरावाळी री छाती माय क म्हारी छाती माय ?

• • •

सीतली

सीतली रो बडोडो बीरो उणनै लवण आयो है । उणरी सासू सनसो करवायो हो, उणनै लैय जावण सारू । उणरै पीर मे इण बात सू चितया भी हुई है क सीतली न ब्याव पछ ई जमा कुल दोय–तीन बिरिया भेजण आळा उणर सासर आळा उणन भेजण रो सनेसो खुद चलाय'र कीकर भिजवायो ? सीतली कोई माडी बात नी कर दी हुव ।

सीतली परमव सू भीज्योडी रोटिया पोवण मे लाग्योडी है । उपराळमे माच माथ उणरो बीरो बठयो है । उणरी सासू धीर धीर बीर सू बाता कर रयी है । सीतली न साणमाण की नी सुणीज रयो है । पण फर भी सीतली र निजरा उठाय'र देखण सू उणर बीर र मुहड माथ चितया उघडती लखाव ।

सीतली रो मोटयार गोडा ताई चढचोडी सूथण न 'मेरा' हाथा सू झाल्या आगण मे आयो है । टकी नडे बठ'र लोटो माजण लागग्यो है । वो अबार ई धोरा जाय'र आयो है । उणन परदेस सू आय न पन्दरक दिन हुया है ।

इण बात सू सीतली र पीर आळा न घणी चितया हुई है क जद कवरसा परदेस हा तद तो सीतली न पीर नी भेजी, ब्याव र दोय साल पछ जद घर आया है, तो उणन लय जावण रो सनेसो कीकर करवाय दियो । मोटे

तोर माथै सीतली री सासू उणर बीर नै कयो–' बडाडी बीनणी न आयान घणा दिन हुयग्या, इण खातर आन कई दिन मेल दवा, थ छाटोडी न भेज दया ।"

छोटोडी बीनणी सीतली री छोटी बन ईज है । उणरी ब्याव ई उणर साग इणी घर म उणर देवर साग हुयो हा । चूल्है म फूक देवता सीतली न रोज आयग्यो छवट उण अडो काई कसूर कियो हो जको सनेसो करबाय'र उणन पीर भेज रैया है ।

पीर जावण रो मन तो किणरो नी हुवै ?

इण बात र सागई सीतली नै पीरो याद आय जाव । याद आय जाव वो नीमडो, सीतली री बाखळ आग उगडियो नीम । तावड री लाय म वा अर रूखडी चढ'र हताई किया करती । हताई री कोडावली सीतली सैग काम घणो बेगो सळटाय लैवती । बापू अर दोवू भाई भाभरक बाणिया र उठ चल्या जाया करता । मां ई डागरा दुय'र चली जावती । बापू अर भाई बाणिया र हाळीचो करता मा उणी हैली म रसाईदाणरी ही ।

उण टम मैग घर रो खोरसो सीतली माथ ई हुवतो । घर मे उणरी छोटाडी बन अर वा दावा माथ ई हुवती । सीतली रोटिया पोवण मू लय'र बिलावणो कर घी तपावण ताई रो सैग काम ढवोढब कर लैवती अर जद ताइ रूखडी नी आवती गाया रा चीचड उपाडण मे ई लागी रैवती । अर पाव ओ कै वा नीमड माथ चढ र रूखडी साग हथाई करण र अलावा निकमा रवणो चोखो नी मानती ।

रूखडी री मा केई बिरिया उणरी मा न कय दिया करती–"बीनणी, थारी सीतली तो काम न पाणी पीव ज्यू पीय जाव, म्हारी रूखडी तो बुट ई वो बाढ नी काम रो ।' फरू की रुक'र निसखारा हाखती–"पण डावडा, कितरा दिन राखसा, पराया धन ?"

अर सीतली री मा रै टीस–सी उठ जावती । गाव रै हेसाब सू सीतली खासी मोटी हुयगी ही । उणरो ब्याव नी हुय रयो हो । रूखडी रो ब्याव हुय र मुकलावो भी हुय चुक्या हा ।

तीन साल सू लगातार कैरासाल भुगत रैया हा। सीतली री मा, बापू अर बीरा सँग मिलन ई नीठ घर-डागरा रो भाघो खिचावता।

'अबै सीतली न तो दोरी-सोरी घोरियै चाढणी ई है, जेठाणी सा, घर रा सँग जणा बगा हा" । सीतली री मा टीस नै सँजाई रो खोळियो पैरायन कैंवती । 'कोई पु याई आळो लय जासी, सीतली तो लिछमी है ।"

इण तर बात खतम हुय जावती ।

अेक दिन सीतली रो सम्पत मामो आयो । बापू अर मा सू मोड ताई बाता करता रयो । झू पडे म चिमनी जगती रयी ।

अचाणचक ई सीतली रो ब्याव मडग्यो । पछ भी सीतली अर रुखडी नीमड माथै हथाई अवस करती । रूखडी अेक दिन उणनै कैयो हो-'सीतली म्हारी मा कव छार म कसर है, पण थारो बापू इण खातर मानग्यो के कसरकी रो ब्याव ई थार देवर साग हुवणो नक्को हुयो है ।"

—"कसर किया ?" सीतली कसर रा अरथाव नी समझी ।

—"कव आरया घणी कमजार अर डील रा अन थाक्ल है ।"

—"चोखो है तो ।" सीतली ने लाज आयगी । अलबत मन म जाणन री घणी हूस ही पछ सीतली साचण लागगी-"रुखडी न लाज सरम नी आव आपरी सँग बाता बता देव बेसरम की तो छोरी री जात है ।'

फरू ई भोळी ढाली सीतली री समझ मे इत्ती बात तो आय ईज गयी क उण र बापू उण न कसर आळ छोर नैं देवण र बदळे मे उणरी छोटोडी बन केसरडी नैं ई घोरिये चाढण री फाँसी निकाळ ली । अर दायज रो जोर मत्तो दर ई नी । व लोक उण रैं सम्पत्त माम रै सँर रा ईज है । घर म चाखा है । परदेसा कारबार है । सीतली थोडी सी बडावली हुवण लागगी । सँर र रैण-सैण री बाता सुणी ही, मन मे घूमण लागगी-पक्को घर पक्को आगणो बिजळी पाणी सेंग घर मे ई ।

'रुखडी रा सासरो तो गाव मे ईज है " वा फर सोचण लागगी ।

अेक दिन गांव म सागी गवगी जान आई। जान री परणी सीतली ताई ई पूगी। बण्ड बाजा, पेण्ट-कोट पैरियोड़ा जानी सीतली र मुण र गिलगिली हुवण लागगी-'अहू' रूपड़ी री जान ता टारां म आई ही अर झूपड़ा में उतरी ही उण रो बापू बाणियां रो मानीजतो है जान मोटर म आई है अर हैली म उतरी है।"

सीतली री छाती बड़ाई सू फूलन लागगी। पण बा देग री सगी, जाय'र अरे वा ' सीतली ने फेर लाज आवगी।

पण रूपड़ी आय'र बताय ई दियो— बीन तो सीतली केसरजी रा फूटरो है ।' अर सीतली री लाज उण र मन माय इतरी भारी पड़ी के उणम उणरा सोच्योड़ा सरूप साम्हो आय ई नीं सक्यो।

ब्याव हुयग्या।

भान जीमण न जान आई तो सीतली झूपड़ै रै आल सू बासळ म जीमतो जान न देखी।

रूपड़ी ठीक कवती ही बडाडो बीन काळो स्याह, थावल अर जाड काचा रो चसमो लगायोड़ा हो, केसरजी रो बीन सावळा, पण भरवं डील डोल रा घणो फूटरै नाक नक्श रो हो।

सीतली कदई चसमा परियोड़ो बीन नी देख्यो हा। उण न अचुभो हुवतो रैयो।

सीतली जद मोटर चढ'र सासरै वहीर हुई तो रूपड़ी उणन सुहाग रात री मोकळी बाता बताई अर सरलावा ई क ईया करजो, यिया करजा, रुपिया दव जद मुहड़ो दिखाइज्यो। सीतली लाज मू बटीजती रयी। उणर साग केसरड़ी पण ही। सात आठ साल री केसरड़ी जद गुवटो काढ र बगी बगी मोटर म चढण लागगी ता सैग जानी ही ही करन हसण लागग्या।

सीतली सासर पूगगी।

बारी-बारी सैग उणरो मुहड़ो देख्यो। सैग थुथको न्हाख न कयो— "वा बाई, बीनणी तो सुआ सी फूटरी लाया।'

ब्याव रा घर हो, सगळा र सोवता सोवता मोडो हुयग्यो। सीतली अर केसरडी नै भी ओसार म सुवाय दी। केसरडी नै वेगी ई नींद आयगी। सीतली न घणी लाज आय रयी ही। अर अेक और तर रो डर सो लाग रयो हो। उणन नींद आय रैयी ही। इतरी बीजळी री जगमगाहट उण पली नी देखी ही।

बिचाळै बिचाळ रूखडी री बतायी बाता चत आय जावती अर वा अेकली बैठी ई लाज मरण लाग जावती। उणरी नणदा उणन बोलावण री घणी कोसिस करी पण वा गूमडी बणी वैठी रयी।

बार धीर धीरै सापो पडण लागग्यो।

–"चालो भोजाई" उणरी नणद उठण खातर कैयो। सीतली री छाती धडकण लागगी। केसरडी सारै माहौल मे डरू फरू हुयगी ही अर रोवण लागगी ही। इण खातर सीतली उणन आपरै खोळ मे सुवाय राखी ही। जोर जत्ता मे सीतली न उठणो ई पडयो।

पण जियाई वा उठी, केसरड री आख खुलगी। अणसैंधी लुगाया र साग आपरी बाई न जावती देख'र वा घबरा'र रोवण लागगी–'बाई, तू सिध जाव ?'

सीतली री नणदा हेसण लागगी। सीतली री हालत कमर मे राडियाड कबूतर री गत हुयगी। नणदा आपरी नानकडी भावज नै लडावण लागगी। पण केसरकी आपरी बाई रा हिडो करनै रोवण लागगी अर जिद कर ली क बाई र कन ई सोयसू।

बारै बाखळ म मोया मिनखा र काना ताई रोळो पूगग्यो। वै चिड र कैयो–"अर रोव कुण है ?

–"कोई कोनी काकाजी ' सीतली री नणद उत्तर दियो। आखर केसरकी री जीत हुयी। सीतली रात भर उणनै खोल्या म लिया वठो रयी।

दिन उगत ई माटियारा आ फसलो कर लियो कै काल सनिवार है, इण खातर वीनण न वयान आज ई पाछी भेज देवा।

दूसर सीतली सासरै आयी तद ताई परण्योडो सायबो आसाम चल्या गयो हो।

केसरडी न टाबर जाण'र पीर म ई छोड दी ही। सीतली इण दोय साल मे अेक दोय हफ्ता न छोड र घणकरी सासर ई रयी। अेकर बा आठ महीना सू पीरै गयी जद रूखडी सासर गयोडी ही उण सू हथाई नी हुय सकी।

अबै सीतली रो मोटियार दो साल सू मुसाफिरी कर'र पूग्यो है। पट री बेमारी लागगी, इण खातर देस आयो है, दुवाई लवण सारू।

—'उठ जाओ, बीनणी त्यार हुय जावो थारा भाई लवण न आय' है।' सीतली री सासू केयो। सीतली गूवठा काढ'र आट सू हाथ झाडती बठी हुयगी।

उणरी समझ मे की नी ढूक्यो।

कपडा साभण खातर पवक म जावता वी गूवठ म्हाखर देख्यो उणरो मोट्यार नाक रै सळा माथै चसमो ठैराया उणर बीर कन चुप्चाप बठ्यो है।

इण तर भेजण र बाबत पूछण सारू सीतली न की नी सूझ रैयो है। उणर सासर र अेका भीत उणर बडिया सासर रो घर पण है। बडिया सुसर र बेटा री बहुआ साग उणरा हथाई रो सीर है।

सीतली आपर सासरै म भाग भाग र खोरसो करयो है। सासर री गळी गुवाडी म उणर स्याणी अर कामू हुवण री बाता चाल। उणरी बडिया सासू ई आपरी बीनण्या र माठपण पर रीसा बळता मेय देव— 'घरमिय री बीनणी जाण काम र पट सू ई जलम्याडी है थान मावा की सिखायो ई नी दिख ।'

अेक आ ठाडो ई आत्मसतोप सीतली र पल्ल रेव।
बडिया सुसर घर आपगी जेठाणी खन पूगता पूगता उणरी आख्या मे चौसरा चालग्या। ध्यावस रो बाध सायनी सीक जेठाणी आग आम र तूटग्या।

"बैन ! मैं काई कसूर कर दियो   थार देवरजी नै आया प"दर दिन हुया है   म न सनेसो करवाय'र क्यू नुडावै ? '

"थार अर धरमजी र बीच कोई बोल-चाल तो नी हुयो ?" जेठाणी उणन धीरज बधावती पूछयो ।

"न !" सीतली रै मुहड माथ दु ख री समदर लेरायग्यो ।

"वै ता आया पछै ई म्हासू बोल्या नी है बस जागत्ता हुव, वित्ती ताळ भीत्या देखता बीडया पीवै । अर फेर बोला बोला ई सूय जावै   " सीतली अेकर चुप हुयगी । आ बात केय'र जाण वा अणूतो भार उखण लियो हुवै, उणरी नाड नीची हुयगी ।

जेठाणी उणरो मुहडो ऊंचा करनै निजरा मिलाई सीतली पुराण, गळघोड पूर दाई 'जरड' करन फाटगी, "हथलेवै री दोप मान बैन दोय बरस हुयग्या, हू ओजू कुवारी ई हू   ।"

जेठाणी सुण'र भाटा हुयगी ।

सीतली न उण आपरै काध माथ टाबर री गत चेप लीवी । सीतली केई ताळ रोवती रयी

"रो मत, सीता   तू जाण जेडी बात नी है   धरमजी रो बेमारी रै कारण जीव मारा नीं रव   नै म नै कया है क हू दस पदरक दिन दुआई लेयसू   व निरोगा हुय जावै हू वान भेज दसू   मैं फर केवू तू जीव छोटो मती कर ।"

सीतली बोर साग धीर पूगगो ।

उणर भोळ मन न जेठाणी री बाता सू ध्यावस हुयग्यो हो। वा प दरै दिन नीकळया पछ उडीक राखण लागगी। आपरी मा न उण आ ई केई क प दर दिना बाद लवण सारू आय जावला ।

पण सीतली री उडीकना रो की मिल्यो ।

आखर अेक दिन उणरो सम्पत मामो उणर सासरै सू सनेसो लायो ।

झूपड म चूल्है सार बठ'र सीतली री मा न कैयो-"सीतली रा परण्योड़ा तो चाल ई बइर हुया है उणारा बापूजी बुलावण रो तार देय दियो

सीतली सुण्यो ।

उणन लखाया के कोई उणन जेवड़ी री गत बट'र मेल दी है । उणन ठा नी पड़ियो कद उणरा दान बाढ़ा भींचीजग्या । वा आगण म पड़ी माचली म मरघोड़ी सी पड़गी । सम्पत मामो उणरी मा न कैव हा- "सीतली री सासू कैवायो है कै बहोड़ो बीनणी हाल अेकर बठया है । आग खेती री रुत म उणन पूगाय'र छोटोड़ी नै लेय जाया ।"

सीतली उठगी ।

झूपड म बड'र छिड़घोड़ी नागण री तर फुफकारती बोली-"सासू न जाय र कैय दिया मामोजी रोटी सट्ट हाळोचो करूली तो म्हारै पीर म ई कर लेजसू हू कोई आज जावू ना काई काल "

"सीतली फम राख ?" मा बोली ।

फम घणाई राख्यो दाय बरस राख लियो साफ सुणल मा राखसी तो हू थार आग आखी उमर काढ लेसू नीतर राम रुखाळो पण बी सासू र जण्योड़ माटी र पिण्ड रो सुहाग लेय'र हाळीचो नी करूली कदई नी करूली "

उणरी मा अर सम्पत मामो उणनै पराई सी निजरा सू देख हा । सीतली रै माय सू जाण आग उछळै ही ।

• • •

बड़पण

ढाणी में आज खासी हळचळ ही।

जहूरखा दोय दिन पछ सरसू आयो अर आवता ई त्यारी मे लागग्यो। बदरू ने मर भेज्या। रुक्क पर नाव लिख'र दियो-'थरी एक्स रम' जहूर खा न बम हो क ओ ठर्रा खोर लाख समझाया पछ ई कठ ठर्गे ई नी उठा लाव।

जहूर खा री नाक आज जाण हाथेक ऊची आयगी। वो आपरै कूकडा चान माय सू दाय सातरा मीक कूकडा ई जी म बाध'र निरवाळा कर लिया। चार कास आग अेक ओर ढाणी ही बठै जाय'र इलाबगस न केय'र आयो क आज बीन कूकडा राधण री आपरी कारीगरी दिखावण सारू अबस नवस आवणो है। इलाबगस खेत रै काम नै छोड र आवण मे लाचारी बताई जणा वो डाट मार दी "थारी विचार लिय थाणेदार जी ज कोई ओळमा दियो तो नाव बता दूला" इलावगस न हुकारणा ई पड्यो।

जहूर खा घडया गिर्ण हो अर सोच हो क आज तो जोर भाग खुल्या। वा सर गयो हो, सादो लावणन, थाणेदारजी साग वीरा कोई घणा भायलाचारा को हा नी। वस, इयाई ऊजळा राम राम हा। अर अ ऊजळा राम राम करणन ई थाणे गयो हो।

"आवा, जहूर खा जी !" थाणेदारजी वीरो स्वागत कर्‌या, "आज

कियां पधारणो हुयो ?"

"इयाई आपरा दरशण करणन'

हा भइ अब म्है ता दरशण जागा ई रेयग्या "

किया पय्या ?' जहूर खां थाणेदारजी रै निजारे पर गौर देवता पूछ्यो।

"किया काकरी साव मदीवाडो है। आ सेता री रन बाद आवै र लाग लडनो ई भूल जाव। दारूआळा पइसा ई क ा स् लाग।" थाणेदारजी उदास हुय र बोल्या

जहूर खा चुप हुयग्यो साची केव थाणेदारजी। लाग रोई म पडया है। सेता म निनाण आयाडा है। किणनै फुरसत है लड'- माथा फुडावण री अर थाणआळा न दारूआळा पइसा वटावण री!

ता जहर खाजी कोनी कोई मामलो थारी निग म ?' थाणेदार जी पूछ्या।

"नी सा_ अमन चन है। जहर खा न आ चोखी वात बनावता ई खासी उदासी लपट म लेय लियो।

'साची ?

'आप पधारन न्ख ला गा। जन्र खा थाणेदारजी र अचूभे नै साच करता कयो।

थाणदारजी पाछा नी बोल्या। कई दर सोचता रया। फर हेलो पाड या, "अरे रामप्रसाद! जीप त्यार है नी? काल आपा जहूर खाजी री ढाणी चालसा।' फेर मुड र जहूर खा न पूछ्यो, क्या जहूर खा जी रोटी पाणी रो वदोबस्त तो हुय जावला! आयोडा गनवासो ई करसा ।

'लो धिनभाग म्हारा!' जहूर खा हरखीजतो बोल्यो, 'आप पधारो तो सरी।'

काल अवस आवा ' थाणेदारजी मुळक र कयो।

ओ काल' आज ई हा।

अब तो टम ई नडो आयग्यो हो, जहूर खा घडी देखी पाच बज ही। तद ई क्ठै ई जीप रा सरणाटा सुणीज्यो। जहूर खा र पगा घूघरा बधग्या।

ढाणी रा न्स बारे झूपडा मे सवन निगै पडगी। आज जहूर खा र अठ हलक रा खास थाणेदारजी ममान है। लाटा लोटा दूध अर घिल्योडया-घिल्योड्या घी पूगावण री होड लागगी जाण। जहूर खा र आपरै झूपड आग बीसेक गाय डागरा बाध्योडा, पण कुण मान?

951
9.4

थाणेदारजी पूगग्या।

चा पाणी पीया अर निमटा निमटी करण सारू निकळग्या। साग तीन सिपाही ई हा। जहूर खा माज'र मेल्योडा लोटा मे पाणी भर दियो। बदरिय साग सिगरेटा ई मगवाई ही। अेक अेक नै निरवाळो पेकेट झला दियो।

झूपड र लार चूल्हा चेत्योडो। इलाबगस मसाला घोट। जहूर खा रा छाटाडा कूकडा अब छोल्या बधारया पडया हा। बान चूल्है चाढण री देर।

अठीनै, थाणेदारजी आव, इत्ती देर मे जहूर खा सगळो बदाबस्त कर दियो। झूपडै म माचा बिचाळै मुढा धरीजग्या। प्लेटा म भुजिया निमकी अर नड तीन रम री ब तला ई त्यार!

दिन चिलको सीक रया जणा थाणेदारजी आयग्या।

जहूर खा अब आप ई आपर ममाना साग बठग्यो। पेल दौर मे ई अक बोतल गिलासा मे ढळगी। झूपड मे सरूर आपरा पग पसारण लाग-ग्यो।

"वा भई जहूर खा जी क्या चीज मगवाई है!" थाणेदारजी गुटको गळ हेट उतार'र कयो।

"सा, आपरी किरपा, है" जहूर खा बोलता गदगद हुयग्या।

वा कलपना कर हो कै केई कासा लग आ बात काल रैयी हवेली का जहूर खा अर थाणेदार री साग उठ बैठ है। गोरी छोरी ऐस रैय र फल ही।

"गाव तो फूटरो है।' अचाणचक सिपाही रामप्रसाद बोल्यो।

"सा, गाव नीं ढाणी है, आ।" जहूर सा कयो।

"हा, ढाणी ई सई पण है फूटरी मया साब!" जेक दूजा सिपाही जक रा नाव जहूर सा नै ोगै नी हो थाणेदारजी नै पूछयो।

दौड

मै केशरीसिंहजी सू मिल लियो ।

स्यात वासू मिलणो ठीक ई रैयो । ठीक इया कै अब वै म्हारै सू की सावळ ई सुरेन्द्र साग बात करसी । सुरे द्र, पूरो नाव लेवा तो श्री सुरेन्द्र गुप्ता ।

सुरे द्र गुप्ता ! तन्न इण तर म्हारो भायलो नी निकळणो चाइजतो । बचपन रा भायला । वा, जको चार दरजा तक म्हारै साग पढ्या अर नबरा सारू बीर अर म्हार बिचाळ हरमेस दौड हुवती । अेकर-दोबार न छोड'र मन्न याद नी कै मैं वीन आग निकळण दियो हुव ।

खर सल्ला, वा बचपन री दौड ही । अब सुरेन्द्र म्हारै सू भोत आग निकळग्यो है । अठ लग क केशरीसिंहजी नाव बतायो तो ई मन्न याद नी आय सक्यो क ओ वो ई सुरेन्द्र है या हुय सकै ।

लाग क पली तकलीफ जमान तक सीमित ही । वीसू मिल्या पछै वा गैरी हुयगी-ठेठ मन मे कुआ खोद र । सुरे द्र, म्हारो बचपन रो दोस्त !

आपनै असल बात बताऊ ?

सुक्रवार री बात है । किसना कयो क पीरै जावूलो । चार बरसा

ताई वीरो सायवा रय'र मैं जित्ती वो न जाण सकू, इण मुजब वा म ा इत्ती सीधी, गऊ सरीखी दीग व रेल म अक्ली यात्रा करण देवणी नी जच सकै। इया मौके-बेमौक वा अकेली गई भी है। इण रो हवाला देय'र वा केयो क म न टम नी तो वा अकेली चली जाव। किसना री मा रा मादगी रा समाचार आया कई दिन हुयग्या, पण आज लाग हा क वीर हिय हूब उठगी।

मैं वी न रेल म बठावण न गयो।

केशरीसिंहजी अठ ई मिल्या।

वा सू काई घणो मेंघपणा नी, म्हार अेक भाई गाव र दफ्तर म व अबार ई बदळी करा'र आयोडा है। म्हारा भाईसा व वारै साग इत्ता न्ना मे ई बेजा हत-प्रेम बढा लियो, इण सारू वे म नैं घर रा ई आदमी लखाव।

मैं वान कयो क थारा टाबर इणी गाडी सू जाव-आप थोडी निग राख लीज्यो।

' पण मैं दो स्टेशन पली उतरू ला। व केयो, 'कोई बात नी। अठ सू की लोग चढै। आपणा मित्तर है। वान केय देसू।'

देख लिया।" मैं इयाई कयो।

'नही तू निश्चित रै' ठीक म्हार भाई सा'ब जितै बडेरपण सू व बोल्या।

अर आज किसना पीर सू पाछी आयगी।

वा स्यात की नी बतावती, पण मैं ई वीर गऊपण न परखण री नीयत करली। 'वो दिन चोखी तर गई नी?' पूछ लियो।

'चोखी तरै?' वा चमक'र बोली, 'इणसू ता चोखो, बिना चौखो तर हरमस दाइ अकेली जावती।'

किया?"

वा बतावण लागगी, 'थे जिणनैं म्हारी भोळावण दी वै भात भला आदमी हा। मिट्टू रोया, तो गोदी लेय'र फिरायो—म्हनैं बाई'सा—बाइसा कँवता रया अर बडा आळी स्टेशन पर बडा लाया।"

"हा, तो फेर काई हुयग्यो ?" मैं हरमेस दाई वीरी बात रा टाग पूछ नी पकड सक रयो हो।

'थ आप उतरता अेक दूज आदमी नै भोळावण देय दीनी। वो ई राड रो ।" किसना ठरगी।

"काई करया वो राड रो ?" मैं फफेडीजतो-सो बोल्यो।

'रेल मे तो की नी बोल्यो। बालता किया ? सामी एक बूढी माजी वठी, पण उतर्‌या पछ !"

'काई हुयो, उतरया पछ ?"

"वो केया के तागा करवा दू, अर मिट्टू न गोदी ऊच'र वईर हुयग्यो। मैं लार लारैं। रस्त म मन पूछ्यो—केशरीसिहजी काई लाग ? मै इयाई अर की भावी पिछाण'र झूठ बोली क वैं चाचा—ताऊ र रिश्तै मे बडा भाई लाग। जणा पूछ्यो कै आपा राजपूत हा काई ? अब म्हार सू झूठ नी बोलीज्यो, केयो कै नीं, म्है तो सरमा हा।"

"पण इण म काई जुलम हुयग्यो ?" मैं वी री रामकथा सू ऊबण लागग्यो।

थ सुणो जद तो बताऊ।" किसना नाराज हुवनी बोली।

'हां, सुणु—पण तू जल्दी बता ।" म्हारी उत्तेजना अब छानी नी रयी। सुणर थ किसना इण पर गौर नी करयो।

'फेर ताग तक लियाया।' वा फर बतावण लागी "ताग म बठाय'र पूछ्या क पुगावण न घर ताई चाल ? मैं काई केवू ? केय दियो—था री इच्छा। जद वो बोल्या आप म्हारे घर चालो । मैं चमकी थारैं घर काई काम ? जणा म्हारी साथळ मू आपरो हाथ अडा'र बोल्यो काम तो थारी इच्छा हुयसी ज्यू कर लेसा ।'

'अच्छया, आ करी की ।" मैं खडो हुयग्यो अर रीस म धर-धर कापण लागग्यो, 'फेर थू काई करयो ?"

"करती काई ? मैं कीरो ढोळ समभगी । थ म न अणपढ़ अणपढ़ केंवता रवो, पण अ वातों तो अणपढ ई समझ । मैं कयो– हाथ बठीन राखो ।"

"वो केयो मान लियो ?"

हा, पण फर की बिना पूछें-ताछ ताग म म्हार कन्नै ई, चढ'र बठ ग्यो । अबै मैं काई कवू ?"

"केंवती क्यिा नहीं ।" म्हारै नाक मे म न गरमी लखावण लागगी, अर माथ म जाण जेठ आसाढ री सूरज तपै । मैं बोल्या, 'सामी ता मासोजी री दुकान ही केय देंवती कै अक्ली चली जावू ला ।"

भई, वो इण तर घस'र बठयो कै म्हारै सू की नी बोलीज्यो ।"

'वी म्हार बाबत की नी पूछयो ?"

'पूछयो । मैं कैंयो क पैली नौकरी करता, अब कहाणियां लिखै । तो वी पूछयो-अच्छया, लेखक है । फेर नाम पूछो जद मैं बता दियो ।'

'अर वी जाण्यो कायनी ?"

'नही वो की नी बोल्यो ।" किसना कयो, ता वी री आ बात म्हार डाम हुव ज्यू लागी । म्हारी पचास र नडे छप्योडी कहाणिया उपलब्धि सू अेकर म ई फालतू जाँवती लखाई ।

किसना सम र चुप रैयगी । मैं ई बात आग बढाई "किसोक दीखतो हो ? मू छया ही काई ?"

'मैं सावळ नी देख्यो । मैं क्यू देखती ! पण स्यान मू छया ही अर गोरे रग रो हो ।'

'कबै, सावळ नी देख्यो अर सब बताव । फर काई थार घर ताई चाल्यो ?'

"नही, रस्त म उतरग्यो ।" म नै पूछ्यो–आपन नी जच तो उतर आऊ मै कयो–उतर ही जाजो तो ठीक रवै । जद उतरग्यो अर जावत–जावत मिट्ट ने कयो–यार, मैं तो मजाक करी । थारी ममी गलत समझगी । म त गुस्सो आयग्यो । मैं कयो इणरो बाप ई घणो म्हारै सागै मजाक करै नै ज थारी मा बण सू मजाक करता ।'

'सब्बास ।' म्हार मुडै सू निकळ्या, "फेर ?"

'फेर काई ? मे घर पूगगो ।"

"नाव काई हो वारो ?"

"मै पूछ्यो कोनी । में क्या पूछतो ?"

"पूछ लेंवती तो ठीक रेंवता । मैं अठ बठ्यो हो सलट लेंवतो । खर सरला ।' कय'र मैं सोचण लागग्यो ।

सोच्यो अर भात साच्यो । केई ताळ किसना पर झुंझळाट आई तो केई ताल जमान पर रीस ।

सोच'र मैं कयो' 'तू क तो वी री टाग्या तुडवा दू ?"

देख लो ।' वा साव ठडी सी बोली ।

मैं फेर साचण लागग्या । सोच्यो कै रामेश्वर ने कागद लिखू । बाता म किसना री बतायोडी याद आयी क बीरै हाथ म अंग्रेजी री अखबार हो । ठीक है रामेश्वर साच लेवला । आ हुवणी चाइज । जरूरी है । फेर मतो पलटग्यो । मैं आप ई जावूला । शर्मि दो करणो ई ठीक है । हुई सो देखी जावैळा । मारूला म्हार ई हाथा सू । या या फेर हा किसना बतायो क वा स्यात बक म नौकरी कर–वी र मेनेजर ने कागद लिखू ।

अर छवट म केशरीसिहजी क नै पूग्यो ।

'थ वीन काई कियो ?" तकलीफ री बात लुको'र म वान मदम चेत विरामा ।

'क्या–म्हारी सिस्टर है । साग टाबर है । मावळ उनार'र लागो

करवा दिय ।"

मारी सिस्टर ही नी ? ' मैं नाटक करता सी बाल्यो, 'ठा है, वी आपरी सिस्टर साग काई ब्योहार करया ? '

"ह ऽ. ।' केशरीसिहजी चमक्या, 'काइ केयो ?"

मैं सक्षेप म सगळी बात बताई ।

' आ हुवणी ता नी चाइज ।' व फेर कया ।

हुयी है नी थ वी न तो जाणो हा ?' म्हारा इसारा म्हारी पत्नी किसना कानी हो । मैं आ बात निजू-पतियार पर आ भूल'र ई कय दी क केशरीसिहजी साच ई वी न नी जाण ।

पण व बाल्या हा हा काई बात करो आदमी चेर सू छानो थाडी ई रवे ! '

तो फेर ? '

मैं जावू ला बात कर ला नालायक साग ।'

केशरीसिहजी न रीस आवता देख'र म न आराम आवण लागग्यो ।

अर केशरीसिहजी सू पैला मैं पूगग्यो ।

किसना भोत पछ म न बतायो क वी दिन ताग रा पइसा ई वीं न्या । ओह ! म न सुण र बेजा रीस आई । सोच्यो-तुर त मनिआडर करू । ठिकाणो तो केशरीसिहजी नैं पूछ हो लिया हो । फेर रइज्यो नी अर मैं आप ई वीन तीन रुपिया पूगावण न आयग्यो ।

देख्यो, तो देख्यो क सुरेन्द्र म्हार सू दौड म खासा आग निकळग्यो है।

दो स्थानीय मेंध पिछाण आळा न मैं साग लेय लिया । व वीन जाणग्या पर ओजू म्हार वी सू मिलण न आवण री गम्भीरता सू अण जाण हा । दूर सू ई व इसारो करयो ,' व ई हु सेविग रा विडो पर बैठया हा जका । '

मूछा म्हारै सूं की ज्यादा ई गैरी । पण चेहरो छिप्यो नी । म्हार सामी चार दरजा ताईं साग पढणआळो चेरो मूंछा लगाया बैठ्या जाणै । मुरे द्र तू ई ? व ई घुघरिया पट्ट अर वोई प्रार्थना री लण म आगै लार ऊभ'र अखूणी मारण आळो सुर द्र । सामी चू ठिया बाढण आळो मैं !

अरे शेखर !' अचभो ओर बडो हुयग्यो जद वी म न, म्हारै सू ई ज्यादा फुर्ती सू पिछाण लियो । 'तू अठ किंया ?"

"इयाई ।' मैं बाल्यो, तू ई अठ बैंक मे है "

"बिल्कुल क्यो जच्यो कोनी ?" वीरी आवाज रो पतळोपणो स्यात मूंछा नीचे दबग्यो हो, "अर तू काई कर आजकाल ?"

वो हरखीजतो सीट काउटर सू उठग्यो अर सरकतो सरकतो बार आयग्यो, 'आव चाला ।"

बैंक र सामी एक मुच्योडी सी होटल मे वीर सामी बठयो हू । वीर सवाल रै उत्तर मे बताय रेयो हू, इयाई यार पढाई लिखाई तो ज्यादा दूर चाली कोनी । मा रो शरीर शात हुयग्यो, जद पिताजी ब्याव कर दियो क घर मे रोटी रो फोडो नी पड । फेर व चाल वईर हुया । नौकरी साधता-सोधता 'ओवर एज' हुयग्या । प्राइवेट नौकरी करी । ई चक्कर म ई सैर छूटग्यो । जमी कोनी । लिखण-पढण रा शौक हो, कहाणिया लिखण लागग्या । समझ ल फ्री लासर हू ।

हा हा वो चमक र बोल्यो, "एक दिन रेल मे कोई एक मिली ही । नाव ई बतायो "वो तू ई हो ! अरे यार ! देख, पिछाण्यो ई नी । मैं पढू कम ई हू । बैंक री नोकरी म अखबार पढीजे, बोई मुश्किल सू फेर फेर यार लखक है तो कोई चाखो सो नाव राखतो थारो नाव बडो कामन है नी शेखर ।' वो म्हारो नाम लेय'र जोर सू हस पडयो ।

म्हार सागे आया जका, दो बाळ गाठिया नै बरसा बाद मिलता देख'र शात अर प्रस नचित बठया दीख ।

मै साचू केशरीसिंहजी सू पली मिलणो स्यात भोत ठीक रैयो ।

ओळू

अजब सर है ओ ।

इण अधकचरै सैर न ठा नी क्यू डिस्ट्रिक्ट हेड क्वाटर बणाय राख्या है । म न आ बात बेजा अणखावणी लखावै पण जाऊ कठ ? नौकरी तो करणी ई है ।

सात दिन चपला घस्या पछ ओ कमरो मिल्यो है । कमरो काई, घुरी है । इण तर बणायन छोडयाना है जाणै मिनख नी घोडा इणन भाड लेवण सारू आवैला । ना खिडक्या अर ना सूटया । किवाड इत्ता नीचा क चिनीक बिरखा हुया ई पाणी माय । बी पर भाडा ! पूछो ई मत । म्हार जिस छाटी तिणखाळ गे तो सुण्या ई काळनो मुड आवै ।

इया मैं अकेलो नी हूं अठै । आ घुरकल्या मे म्है पूरा चवदै जणा हा । दो ता म्हारै बराबर रा ई सिरकारु नौकर है अेक वाटरवक्स रो पप ड्राईवर अर बाकी सैग पढणिया छोरा ।

मैं पला दस दिना म ई सगळा सू चाखी सैंध पिछाण कर ली । दिनुग ता दफ्तर जावण री उतावळ रवै, पण सिझ्या फुसतआळी हुव । हरेक कमर माय स्टोव रो सुमाड सुणीज जिणमे सगीत री गुजायश साधनै इणा टम पप ड्राइवर जेक पीपा बजाय बजाय न गावण लाग जाव ।

कमरा र आगै खुल चौगान मे अेक टूटी लाग्योडी है जिकी बद करया पछे ई टपकती रेवै । इण टूटी नीच भीलवाडै री पट्टी रो अेक चौकुटो टुकडो धर्योडो है । टूटी खोलता ई इण पर पडती पाणी री धार छिनरावण लाग जावै, जिया म्है सगळा दफ्तरा क स्कूला कालेजा कानी छितरावा ।

सिझ्या न म्है गेटया बिना उतावळ र पोवा अर पछ आप आपरा स्टोव बद करन चौगान म भेळा हुवा, पसेव सू भरीज्योडा । बनियाना खोल खाल्नै डील नै हुवा लगावा अर हाथा पर मु ड सू फूका दवा, जिया कोई खाया पली तात गासियँ न ठडो कर ।

पैली पली केई दिन म न लखायो क हाथै रोटी पोया भूख खुल'र लागै । आ दिना मैं काडावलो हुयनै जीमणन बठतो । आजकालै लागै क भूख लागणआळी बात तो साची हुवैला, पण कोड मरग्यो ।

अठै इण तरै री नित नूवी बाता लखावती ई रेव ।

य जडी ई किणी बात सू गुजरण रा खिण हुवला जद देवघर म्हार कानी की याद करता सीक आयो । म्हा चवद जणा म कुण कीरा घणो-कमती हेताळू है आ मैं लालन तो देखी ही नी पण देवधर आळा पावो म्हा कानी मन सरू सू ई भारी लखावता । ठा नी म्हारो काई सरूप वीन आदर जोग लखायो कै वो अठै जेक बोज न नाव लेयन बुलावणै र खुलपण रै उपरात मनै भाइसा कँवण लागग्यो हो । औम्था म वो अवस म्हार सू की कम हुवला, पण इत्तो काई खास बात है आ !

खरसला, तो देवघर आपरी ठौड उभो उभो तीर छुटण री गळाई चाल्न म्हारनड पूग्यो । इत्तो ई उतावळो हुयन बोल्या ' भाइसा थे शिक्षा विभाग म हो नी ?'

"हा देवघर " मैं मुळक्यो, 'अठै सगळा न ई तो ठा है आ बात ।"

"है तो सरी पण ।"

' पण काई, देवघर !"

"आ ई क अेकर भळ पूछनै थ्यावस मर लेवू" वो मचा मरता-सीक बोलन नाड नीची घाल लीवी ।

मन वीरी भोळप माथ हँसी आवण ढूकी अर मैं हँसता अर वीर सामी दखतो रयो ।

"भइसा, अर जरूरी बात री निग करणी है " वो मुहडा उतारन बोल्यो, तो मन म्हार हसण माथै पछतावो हुवण लागग्या ।

मैं अब गंभीर हुयन वी सामी देख्यो ।

मरयोड सिरकार नौकर री औलाद !"

कयनै वो ठीक म्हार मड आयो अर आग उणरी बोली हाथ सू छूटोड किणी काच रै भाड री गळाई किरचा किरचा हुयन सिहगी ।

'दवधर !" मैं उणर काध पर हाथ धरयो' वयू क मन वा डरयोडो लखायो ।

वा चुप ।

'देवधर तू की पूछ हा नी ! काई हुयो थार अचाणचक ?

वा फर ई चुप ।

'हा मर्याड सिरकार नौकर री औलाद रै बाबत बाल तन काई पूछणो ? मैं देवधर न झिझोडी मी दी पण वा तो जाण भाटो हुयग्यो हुव ।

मन अेक झुझळ माय री माय खावण लागगी ।

मैं थोडो दूर सरकन ऊभो रयो अर देवधर मुडनो थका और ई दूर गयो परो । वीन जावता लखायो क वीर हिय री काई दोरफ फकत चर पर ई नी, उणर डील पर ई डेरो जमा राग्यो है ।

नीची छातआळा आ कमरा री अक्ल छात म्हा सगळा रो सामूहिक शयनागार है । म्हे बाउण्ड्री री भीत माथ पग धरन बिना पगोथिया री इण

छात पर जिया तिया पूग जावा अर अेक बीज रा गूदड़ा बिछावणा ई ऊपर खाच लेवा । बस पछ रात हुव तारा हुव, चादणपख मे चाद ही हुवै अर नित री बासी हुयोडी बाता त्रिया म्है हुवा । आ बाता मे नौकरी, इम्तहान, सिनेमा अर लडाई झगडा रै अलावा ई चर्चावा चालै जकी अठै लिखणी मुनासिब कोनी । हा, सखेप मे वांन आपा स्त्री पुरुष सबघा री गुप्ताऊ बाता केय सका ।

नित री आ बासी बाता सू ज थोडी घणी उकताहट हुव, तो वा फक्त म्हार माय ही लाध मक, पण म्हारी आ उकताहट ओजू इत्ती अभि जात नी कै अठै रवणो ई असम्भव लखावण लाग जाव ।

आज सिंझ्या देवघर र अणमण जावण सू म्हारो मन ई की अणमणो ही हो । मैं रोटी पाणी जीमनै बार निकळग्यो हो अर पाछो आयो जित्त सगळा भाई लोग छात पर पूगग्या हा । पप ड्राइवर अेक हरियाणवी राग गाव हो जक री भाईडा की अणूती दाद देव हा । ललाव हो कै तारा र उजास मे सगळा आप आपर मन री गाठा खोल खोलन बिचूर हा । हरि-याणवी राग आप री जिण लिलडदी सारू आळखीज, ठीक वो ई स्वाद पप ड्राइवर र गीत रो हो जक न कोई और विशेषण भी दिरीज सक ।

मै म्हार बिछावणा झुड सू की निरवाळो बिछायो अर इण मौज मस्ती म सामल हुवण री मनवार हाथाजोडी स् पाछी करी ।

थाडी देर हुयी के गळी गै बी पारआलआपर घर री छात पर ऊभन वकील सा'ब ऐतराज करयो क ओ कोई भला मिनखा री तरीको है क डागळा चढन गैळो कर ।

'चुप मरा ?" गावण आळ अर सुणनआळी न बेयीजणआळी इण रीसाळ आवाज पर मैं चिमकग्यो । आ आवाज देवधर री ही । मन अचभो हुयो क देवधर इण तर चीख भी सक ।

देवधर " मैं हेलो करयो, "तू अठी नआय जा ?"

पण वा ओजू सगळा न चूप करणा चाव हो ।

इण वकीलड री तो मा री !" आ उक्ति किण ई अधार म भाळै

री गळाई घलाई ।

'देवधर !" मैं फर हलो करयो ।

अबक यो सुण्यो अर मैं देख्यो क वो आवे हो । इत्तो उजास नीं हो के वीर चरै री लकीरा दीखती पण अधार म चालता वीर डील र पाण ई रीस लखाव ही ।

देवधर म्हजडै री टूटोडी डाळी री गळाई म्हारै बिछावणै पर आय पड्या ।

'अ रोळा वर तो थारो काई लेव ! तू क्यू लोही बाळ यार ?" मैं वीन सायत देखण साह्रू कयो ।

वो कीं नी बाल्यो । मैं वीन गौर सूं देखण लागग्यो । देखणो काई, हू वीर मौन मे की सुणन री चेष्टा करी । दूज कानी राग खतम हुयो अर ताळया बाज ही । वकील सा'ब छवट पग पटकता थका नीचे चल्या गया हा ।

त नै रागा चोखो नी लाग !' मैं पूछयो ।

भइसा मैं तग आगग्या पण जाऊ कठ ' देवधर पडूतर दियो ।

कठ जावणो चाव तो तू ?"

"भईसा, इण सूं तो ठीक हो क टाटा चरावतो माटी खोदतो अर मजूरी करतो ?"

मैं ओरी सीग पूछ वायरी वाता सुणन अचूभै मे पडग्यो ।

"भइसा, मैं साचाणी तग हुयोडा हू ।' वो फर ई चीखता सीक

बोल्या, "था सूं बात करणी चाई, थ ई हसण लागग्या ।'

देवधर, मन निग ई नी क काई बात है, पण मैं कोई हळकी पतळी केयी हुव तो माफी निरावज वीरा ? ' मै उणन पतियार म लेवण साह्रू साफ मन सूं माफी माग लीवी ।

बडपण

ढाणी म आज खासी हळचळ ही।

जहूरखा दोय दिन पछ सहर सू आयो अर आवता ई त्यारी म लागग्यो। बदरू न सहर भेज्या। रुक्क पर नाव लिख'र दियो– थरी एक्स रम' जहूर खा न बप हो क ओ ठर्रा खोर लाख समझाया पछ ई कठै ठर्रो ई नी छटा लाव।

जहूर खा री नाक आज जाण हाथक ऊंची आयगी। वी आपर कूकड़ा नान माय सू दोय सानरा सीक कूकड़ा ई जी म बाध'र निरवाळा कर लिया। चार कोस आग अेक और ढाणी ही बठ जाय'र इलाकस न कय र आयो क आज वीन कूकड़ा रांधण री आपरी कारीगरी दिखावण सारू अवस नवस आ्णो है। इलाकस मत र काम न छाड'र आवण म लाचारी बताई जणा वी डाट मार दी 'थारी विचार लिय, थाणैदार जी ज कोई ओळमो दियो तो नाव बना दूला" इलाकस नै हकारणो ई पड यो।

जहूर खा घड्यां गिण हो अर सोच हो क आज तो जोर भाग गुल्या। वा मर गयो हो, सानो लावणनै, थाणेदारजी सागै वीरा कोई घणा भायलाचारा को हा नी। बस, इयाई ऊजळा राम राम हा। अर अ ऊजळा राम राम करणन ई थाण गया हो।

'आवो जहूरखां जी। थाणेदारजी वीरो स्वागत करयो, 'आज

किया पधारणो हुयो ?"

'इयाई आपरा दशण करणन'

"हा भई अब म्है तो दशण जागा ई रेयग्या "

' किया घण्या ? ' जहूर खा थाणेदारजी रै निसखार पर गौर देवता पूछ्यो ।

"किया कायरी साव मदीवाडो है। आ खेता री रुत काई आव क लोग लडनो ई भूल जाव। दारूआळा पइसा ई क न सू लाग ! 'थाणेदारजी उदास हुय'र बोल्या

जहूर खा चुप हुयग्यो साची केव थाणेदारजी । लोग रोई मे पडया है । खेता मे निनाण आयोडो है। किणन फुसत है लड र माथा फुडावण री अर थाणआळा न दारूआळा पइसा बटावण री !

'ता जहूर खाजी कानी काइ मामलो थारी निग मे ? थाणेदार जी पूछ्या ।

'नी सा अमन चन है ।' जहूर खा न आ चोखी बात बतावता ई खासी उदासी लपेट म लेय लिया ।

'साची ?

' आप पधारन दख लो सा ।' जहूर खा थाणेदारजी र अचूभे न साच करता कयो ।

थाणदारजी पाछा नी बोल्या । कइ दर सोचता रया । फर हेलो पाड यो "अर रामप्रसाद ! जीप त्यार है नी ? काल आपा जहूर खाजी री ढाणी चालमा ।' फेर मुड र जहूर खा न पूछ्यो ' क्या जहूर खा जी, रोटो पाणी रो बदोबस्त तो हुय जावला ! आयोडा रातबासो ई करसा ।

"ता धिनभाग म्हारा ! जहूर खा हरखीजता बोल्यो, आप पधारो तो मरो ।'

"काल अवस आवा " थाणेदारजी मुळक'र कयो ।

ओ काल' आज है हा ।

अब तो टम ई नडो आयग्यो हो जहूर खा घडी देखी पाच बज ही । तद ई कठ ई जीप रा सरणाटा सुणीज्यो । जहूर खा रै पगा घूघरा वधग्या ।

ढाणी रा दस बार झूपडा म सबन निग पडगी । आज जहूर खा र अठ हलक रा खास थाणेदारजी ममान है । लाटा लोटा दूध अर घिल्योडया घिल्योडया घी पूगावण री होड लागगी जाण । जहूर खा र आपर झूपड आग बीसेक गाय डागरा बाध्योडा, पण कुण मान ?

थाणेदारजी पूगग्या ।

चा पाणी पीया अर निमटा निमटी करण सारू निकळग्या । साग तीन सिपाही ई हा । जहूर खा माज'र मेल्योडा लोटा म पाणी भर दियो । बन्रिय साग सिगरेटा ई मगवाई ही । अेक अक न निरवाळो पेक्ट झला दियो ।

झूपड र लार चूल्हो चेत्योडो । इलाबगस मसाला घाट । जहूर खा रा छाटाडा कूकडा अत्र छाल्या वधारया पडया हा । बान चूल्है चाढण री देर ।

अठीन, थाणेदारजी आव इत्ती देर म जहूर खा सगळो बन्दोवस्त कर दियो । झूपडै म माचा बिचाळ मुढा धरीजग्या । प्लेटा म मुजिया निमकी अर नह तीन रम री बतला ई त्यार ।

न्नि चित्रका सीक रया जणा थाणदारजी आयग्या ।

जहूर खा अब आप ई आपर ममाना साग बठग्यो । पल दौर म ई अर बातल गिनामा म ढळगी । झूपड म सरूर आपरा पग पसारण लाग-ग्या ।

'वा भई जहूर खा जी बरा चीज मगवाई है ।" थाणेदारजी गुग्यो गळ हट उतार र कयो ।

खा, आपरी किरपा, है जहूर खा बोलता गद्गद हुयग्यो ।

बो ममपना कर हो क बेई बागा लग आ बात पल रयी हुवला क जहूर खा अर थाणदार री साग उठ बठ है । बीरो छाती रय रय'र फूल ही ।

"गाव तो फूटरो है ।" अचाणचक सिपाही रामप्रसाद बोल्यो ।

"सा, गाव नी ढाणी है, आ ।" जहूर खा कया।

'हा, ढाणी ई सई पण है फूटरी वयो साब !" अेक दूजा सिपाही जक रो नाव जहूर खा न नीग नी हो थाणेदारजी न पूछ्यो ।

दौड़

मैं केशरीसिंहजी सूं मिल लियो ।

स्यात वासूं मिलणो ठीक ई रयो । ठीक इया क अब व म्हारैं सूं की सावळ ई सुरेन्द्र साग बात करसी । सुरेन्द्र, पूरो नाव लेवा तो श्री सुरेन्द्र गुप्ता ।

सुरेन्द्र गुप्ता ! तन्न इण तर म्हारो भायलो नीं निकळणो चाइजतो । बचपन रो भायलो । बो, जको चार दरजा तक म्हार साग पढ्यो अर नबरा साख वीर अर म्हार बिचाळ हरमेस दौड हुवती । अेकर-दोवार न छोड'र मन्न याद नी क मैं बीन आग निकळण दियो हुवैं ।

खर सल्ला, बा बचपन री दौड ही । अब सुरेन्द्र म्हारैं सूं भोत आगैं निकळ्यो है । अठ लग कै केशरीसिंहजी नाव बतायो तो ई म न याद नी आय सक्यो कैं ओ वो ई सुरेन्द्र है या हुय सक ।

लाग क पली तकलीफ जमान तक सीमित ही । चीसूं मिल्या पछै वा गरी हुयगी–ठेठ मन म कुओ खोद'र । सुरेन्द्र, म्हारा बचपन रो दोस्त ।

आपन असल बात बताऊ ।

सुकरवार री बात है । किसना कयो कै पीर जावूली । चार बरसा

ताई वीरा सायबा रय'र मैं जित्ती वो नै जाण सकू, उण मुजब वा म'न इत्ती सीधी, गऊ सरीखी दीस क रेल मे अकेली यात्रा करण देवणी नी जच सक। इया मौके-बेमौक वा अकली गई भी है। इण रो हवालो देय'र वा कयो कै म'न टैम नी, तो वा अकेली चली जाव। किसना री मा रा मान्दी रा समाचार आया केई दिन हुयग्या, पण आज लाग हा क वीर हिय हक उठगी।

मैं वी न रेल म बठावण न गयो।

केशरीसिहजी अठ ई मिल्या।

वा सू कोई घणो सेंधपणो नी, म्हार अेक भाई साब'र दफ्तर म व अबार ई बदली करा'र आयोडा है। म्हारा भाईसा'ब वार साग इत्ता दिना मे ई बेजा हेत-प्रेम बढा लियो इण साम्ब व म न घर रा ई आदमी लखाव।

मैं वान कयो क थारा टाबर इणी गाडी सू जाय-आप थोडी निग राख लीज्यो।

"पण मैं दो स्टेशन पली उतरू ला। व कया, 'काइ बात नी। बठ सू की लोग चढ। आपणा मित्तर है। वान केय देसू।"

' देख लिया।" मैं इयाई कयो।

' नही, तू निश्चित रै" ठीक म्हार भाई सा ब जित बडेरपण सू व बोल्या।

अर आज किसना पीर सू पाछी आयगी।

वा स्यात की नी बतावती, पण मैं ई वीर गऊपण नै परखण री नीयत करली। "वो दिन चाखी तर गई नी ? ' पूछ लियो।

' चोखी तरै ?" वा चमक'र बोली, ' इणसू तो चोखो बिना चोखी ' तर हरमस दाई अकेली जावनी।'

' किया ?"

वा बतावण लागगी, "थे जिणन म्हारी ,भोळावण दी वैं भात भला आदमी हा । मिट्रू रोयो, तो गोदी लेय'र फिरायो-म्हन बाई'सा-बाइसा केंवता रया अर बडा आळी स्टेशन पर बडा लाया ।"

"हा, तो फर काइ हुयग्यो ?" मै हरमेस दाई वीरी बात रा टाग पूछ नी पकड सक रयो हो ।

'व आप उतरता अेक दूज आदमी न भोळावण देय दीनी । वो ई राड रो ।" किसना ठरगी ।

"काई करया वा राड रो ?" मै फफेडीजतो-सो बाल्यो ।

'रल म तो की नी बोल्यो । बोलता किया ? सामी एक बूढी माजी वठी, पण उतर्‌या पछ !"

"काई हुयो, उतरचा पछ ?"

"वा केयो के तागो करवा दू , अर मिट्रू नै गोदी ऊच'र बईर हुयग्यो। मैं लारे लारे । रस्ते मे म नै पूछ्यो-केशरीसिहजी काई लाग ? मै इयाई अर की भावो पिछाण'र झूठ बोली क व चाचा-ताऊ र रिश्त मे बडा भाई लाग । जणा पूछ्यो के आपा राजपूत हा काई ? अब म्हार सू झूठ नी बोलीज्या, केयो कै नीं, म्है तो सरमा हा।"

"पण इण म काई जुल्म हुयग्यो ?" मैं वी री रामकथा सू ऊबण लागग्यो ।

"थ सुणो जद तो बताऊ ।' किसना नाराज हुवनी बोली ।

'हा, सुणु-पण तू जल्दी बता ।" म्हारी उत्तेजना अब छानी नी रैयो । सुक्रर क किसना इण पर गौर नीं करयो ।

फेर ताग तक लियाया ।" वा फैर बतावण लागी, "ताग म वठाय'र पूछयो क पुगावण न घर ताई चाल ? मै काई केवू ? केय दियो-था री इच्छा । जद वो बोल्यो आप म्हारै घर चालो । मैं चमकी थार घर काई काम ? जणा म्हारी साथळ सू आपरा हाथ अडा'र बोल्यो काम नो थारी इच्छया हुयसी ज्यू कर लेसा ।"

"अच्छया, आ करी वी । ' मैं सड़ो हुयग्यो अर रीस म थर-थर कापण लागग्यो, "फेर थू काई करयो ?"

'करती काई ? मैं बीरो डोळ समभगी । थ म'न अणपढ-अणपढ कैंवता रवो पण अै बातां तो अणपढ ई समझ । मैं कयो-' हाथ बठीन राखो !"

'वो केयो मान लियो ?"

'हा, पण फर की बिना पूछ-ताछ ताग म म्हार कनै ई, चढ'र बठ ग्यो । अबै मैं कांई केवू ?"

'कैंवती किया नहीं ।" म्हार नाक म म न गरमी लग्यावण लागगी, अर माथ म जाण जेठ आसाढ रो सूरज तपै । मैं बोल्या, 'सामी ता मासोजी री दुकान ही केय देंवती क अकेली चली जावू ला ।"

"भई, वो इण तरै घस'र बठ्यो क म्हारै सू की नी बोलीज्यो ।"

'वी म्हार बाबत की नी पूछ्यो ?"

"पूछ्यो । मैं कयो क पली नौकरी करता, अब कहाणियां लिख । तो वो पूछ्यो-अच्छया, लेखक है । फेर नाम पूछ्यो जद मैं बता दियो ।'

'अर वी जाण्यो कायनी ?"

"नहीं, वो की नी बोल्या ।" किसना कयो, तो वी री आ बात म्हार डाम हुव ज्यू लागी । म्हारी पचास र नड़े छप्योड़ी कहाणिया उपलब्धि सू अेकर म ई फालतू जांवती लखाई ।

किसना सैंम'र चुप रयगी । मैं ई बात आग बढाइ 'किसोक दीखतो हो ? मू छया ही काइ ?"

'मैं सावळ नी देख्यो । मैं क्यू देखती ! पण स्यात मू छया ही अर गोरे रग रो हो ।'

'कवे, सावळ नी देख्यो अर सब बताव । फेर काई थार घर ताई चाल्या ?'

"नहीं, रस्त म उतरग्यो।" म न पूछ्यो–आपनै नी जच तो उतर जाऊ मैं कयो–उतर ही जाओ तो ठीक रैवै । जद उतरग्यो अर जावतै–जावत मिट्र ने कयो–यार, मै तो मजाक करी । थारी ममी गलत समझगी । म न गुस्सो आयग्यो । मैं कया इणरो बाप ई घणो म्हारै सागै मजाक कर न थ थारी मा वण सू मजाक करता ।'

'सब्बास ।' म्हार मुडै सू निकळ्या, "फेर ?"

"फेर काई ? मैं घर पूगगी ।"

"नाव काई हो वारो ?"

"मै पूछ्यो कोनी । म क्या पूछती ?"

'पूछ लेंवती तो ठीक रैंवतो । मैं अठ बठ्यो ही सलट लेंवती । सर सल्ला ।" कय र मै सोचण लागग्यो ।

सोच्यो अर भोत सोच्यो । केई ताळ किसना पर झुंझळाट आई तो केइ ताल जमान पर रीस ।

सोच'र मै कयो' 'तू क तो वी री टाग्या तुडवा दू ?"

'दख ला ।' वा साव ठंडी सी बोली ।

मैं फेर साचण लागग्या । सोच्यो क रामेश्वर ने कागद लिखू । बाता म किसना री बनायोडी याद आयी क वीर हाथ म अंग्रेजी रो अखबार हो । ठीक है, रामश्वर सोच लेवला । आ हुवणी चाइजै । जरूरी है । फेर मता पलट्यो । मैं आप ई जावूला । शर्मि दो करणो ई ठीक है । हुई सो देखी जावळा । मारूला म्हार ई हाथा सू । या या फेर हा किसना बतायो क वो स्यान बैंक म नौकरी कर–वी र मेनजर ने कागद लिखू ।

अर छेवट मे केशरीसिंहजी कन्न पूग्यो ।

'थ बीन काई कियो ?" तकलीफ री बात लुको'र मै वान सदम चेत गिरायो ।

'कैयो–म्हारी सिस्टर है । साग टाबर है । सावळ उतार'र तागो

प रवा दिय ।

"थारी सिस्टर ही नीं ?" मैं नाटक करतो सो बाल्या, टा है, वी आपरी सिस्टर साग काई ब्योहार करया ?"

"हु ऽऽ ।" केशरीसिहजी चमक्या, "काई केवो ?"

मैं सखेप म सगळी वात बताई ।

'आ हुवणी ता नी चाइज ।" व फेर कया ।

हुयी है नी थे वी न तो जाणो हो ?" म्हारो इसारो म्हारी पत्नी किसना कानी हो । मैं आ वात निजू-पतियार पर आ भूल'र ई कय दी क केशरीसिहजी साच ई वी न नी जाण ।

पण व बोल्या 'हा हा काई बात करो आदमी चेर सू छानो थाडी ई रवे ।

'तो फेर ?"

'मैं जावू ला बात करू ला नालायक साग ।'

केशरीसिहजी नै रीस आवता देख'र म न आराम आवण लागग्यो ।

अर केशरीसिहजी सू पला मैं पूगग्यो ।

किसना भोत पछ म न बतायो क वी दिन तार्ग रा पइसा ई वीं न्या । ओह ! म न सुण र वेजा रीस आई । सोच्यो-तुर त मनिआडर करू । ठिकाणो तो केशरीसिहजी न पूछ ही लियो हो । फेर रेइज्यो नी अर मैं आप ई वी न तीन रुपिया पूगावण नै आयग्यो ।

देख्यो, तो देख्या क सुरेन्द्र म्हार सू दौड म खासा आग निकळग्यो है।

दो स्थानीय सेंध पिछाण आळा न मैं साग लेय लिया । व वीन जाणग्या पर ओजू म्हार वी सू मिलण न आवण री गम्भीरता सू अण जाण हा । दूर सू ई व इसारो करयो ,' बै ई है सेंविग रा विंडो पर बठया हा जका ।'

मूछा म्हार सूं की ज्यादा ई गैरी। पण चेहरो छिप्यो नी। म्हारै सामी चार दरजा नाई माग पढणआळो चेरा मूछा लगाया बैठ्यो जाणै। सुरेन्द्र तू ई ? व ई घुंघरिया पट्ट अर वोई प्राथना री लग मे आगै-लार ऊभ र अरूणी मारण आळो सुरेन्द्र। सामी चूंठिया बोढण आळो मैं!

अर शेखर!' अचभो और बडो हुयग्यो जद वी मन्न, म्हारै सूं ई ज्यादा फुर्ती सूं पिछाण लियो। "तू अठै किया ?"

"इयाई ।' मैं बोल्यो, तू ई अठ बैंक म है "

"बिल्कुल क्यो जच्यो कोनी ?' वीरी आवाज रो पतळोपणो स्यान मूछा नीचे दबग्यो हो "अर तू काई कर आजकाल ?"

वो हरखीजतो सीक काउंटर सूं उठयो अर सरकतो सरकतो बार आयग्यो, "आव चाला ।"

बैठ र सामी एक मुच्योडी सी होटल मे वीर सामी बठयो हूं। वीर सवाल रै उत्तर मे बताय रेयो हूं, इयाई यार पढाई लिखाई ता ज्यादा दूर चाली कोनी। मा रा शरीर शात हुयग्यो, जद पिताजी ब्याव कर दियो क घर म रोटी रो फोडो नी पड। फेर व चाल बईर हुया । नौकरी सोधता सोधता 'ओवर एज' हुयग्यो। प्राइवेट नौकरी करी । ई चक्कर म ई मर छूटग्यो। जमी कोनी। लिखण–पढण रा शौक हो, कहाणिया लिखण लागग्या। समझ लै की लोसर हूं।

'हा हा वो ठमक र बोल्या, 'एक दिन रेल म कोई एक मिलो ही। नाव ई बतायो ' वा तू इ हो! अर यार! देख, पिछाण्या ई नी। मैं पढू घम ई हूं। बैंक री नौकरी म अखबार पढीजे, बाई मुश्किल सूं फेर फेर यार लेखक है ता कोई थारो मो नाव रासतो थारा नाव बडा कामरा है शेखर ।' वो म्हारो नाम लय र जोर सूं हस पडया।

म्हार मांगे आता जका, जो बाळ गाठिया न करता वा मिनता दग र नार अर प्रस ौथिर बठ्या दीग।

। गाडू मैनारीसिह्जी गू पगी मिनगा स्यात भाग टीक रयो।

ओळू

अजब सर है ओ ।

इण अधकचर सैर नैं ठा नी क्यू डिस्ट्रिक्ट हेड क्वाटर बणाय राख्या है । म न आ बात बजा अणखावणी लखावैं, पण जाऊ कठ ? नौकरी तो करणी ई है ।

सात दिन चपला घस्या पछ ओ कमरो मिल्यो है । कमरो काई, घुरी है । इण तर बणायन छोडयाडो है जाण मिनख नीं घोडा इणन भाड लेवण सारू आवैंला । ना खिडक्या अर ना खूटया । किंवाड इत्ता नीचा क चिनीक बिरखा हुया ई पाणी माय । वी पर भाडा ! पूछो ई मत । म्हार जिस छोटी तिणखाळ गे तो सुण्या ई काळजो मुड आवैं ।

इया मैं अकेलो नी हूँ अठ । आ घुरकल्या मे म्है पूरा चवद जणा हा । दो ता म्हार बरावर रा ई सिरकारु नौकर है अेक वाटरवक्स रो पप ड्राईवर अर बाकी सैग पढणिया छोरा ।

मैं पेला दस दिना म ई सगळा सू चोखी सेंध पिछाण कर ली । दिनुग तो दफ्तर जावण री उतावळ रवे, पण सिंझ्या फुसतआळी हुव । हरेक कमर माय स्टोव रो सुसाड सुणीज जिणमे सगीत री गुजायश साधनैं इणो टम पप ड्राइवर जेक पीपो बजाय बजाय न गावण लाग जाव ।

कमरा र आगै, खुल चौगान मे अेक टूटी लाग्योडी है जिकी बद करया पछ ई टपकती रेव । इण टूटी नीच भीलवाडै री पट्टी रा अेक चौकुटो टुकडो घर्योडो है । टूटी खालता ई इण पर पडती पाणी री धार छितरावण लाग जावै, जिया म्है सगळा दफतर मै स्कूलां कॉलजा यानी छितरावा ।

सिझ्या नै म्है रोटया बिना उतावळ रै पोवा अर पछै आप आपरा स्टोव वद करनै चौगान मे भेळा हुवा, पसेव सू भगीज्योडा । बनियाना खोल-खोलन डील नै हवा लगावा अर हाथा पर मु ड सू फूका दवा, जिया कोई खाया पली तातै गासियै न ठडो कर ।

पली पली केई दिन मन लखायो क हाथै रोटी पोया भूख खुल'र लागै । आ दिना मै काडावला हुयन जीमणन बठता । आजकालै लागै मै भूख लागणआळी बात तो साची हुवैला, पण कोड मरग्यो ।

अठ इण तरै री नित नूवी बाता लखावती ई रेवै ।

व अडी ई किणी बात सू गुजरण रा खिण हुवला, जद देवघर म्हार कानी की याद करता सीक आयो । म्हा चवद जणा मे कुण कीरा घणो कमती हेताळू है, आ मै तोलन तो देखी ही नी पण देवघर आळो पाखो म्हा कानी मन सरू सू ई भारी लखावतो । ठा नी म्हारो काई सरूप वीन आदर जोग लखायो क वा अठ अेक बीज नै नाव लेयनै बुलावणै रै खुलपण र उपरात मनै भाम्मा' कैवण लागग्यो हो । औस्था म वो अवस म्हारै सू की कम हुवला, पण इत्ती काई खास बात है आ !

खरसला, तो देवघर आपरी ठौड उभो उभो तीर छुटण री गळाई चालन म्हार नैड पूग्यो । इत्तो ई उतावळो हुयनै बोल्यो ' भाइसा, थे शिक्षा विभाग म हो नी ?"

"हा देवघर ' मै मुळक्यो, अठै सगळा न ई तो ठा है आ बात ।"

"है तो सरी पण ।"

"पण काई, देवघर !'

"आई क अेकर भळै पूछन ब्यावस कर लेवू" वो सको मरता-सीक बोलन नाड नीची घाल लीवी ।

मनै वीरो भाळप माथै हँसी आवण ढूकी अर मैं हँसतो अर वार सामी देखता रैयो ।

'भइमा, अेक जरूरी बात री निर्गै करणी है" वो मुहडा उतारन बाल्यो, तो मनै म्हार हसण माथै पछतावा हुवण लागग्यो ।

मैं अबै गभीर हुयन वी सामी देख्यो ।

'मर्योड सिरकार नौकर री औलाद !'

कयन वो ठीक म्हार नेड आयो अर आग उणरी बोली हाथ सू छूटोड किणी काच रै भाड री गळाई किरचा किरचा हुयनै खिडगी ।

'देवघर !" मैं उणर काध पर हाथ धरया क्यू क मन यो डरयोडो लखाया ।

वो चुप ।

'देवधर तू की पूछ हा नी ! काई हुया थार अचाणचक ?"

वो फर ई चुप ।

"हा मर्योड गिरकार नौकर री औलाद र बाबत बोल तन काई पूछणो ? ' मैं देवधर न झिझोडी सी दी पण वो ता जाण भाटो हुयग्यो हुवै ।

मन जेर हुझळ मोय री माय खावण लागगी ।

मैं थाडो दूर सरकन ऊभो रयो अर देवधर मुडनो थरा ओर ई दूर गयो परो । वीन जावता लखायो क वीर हिय री काई दोरफ पकत घर पर ई नी, उणर डील पर ई डेरो जमा राख्यो है ।

नीची छातआळा या कमरो री अेक छान म्हा गगळा रा सामूहिक नयतागार है । म्है बावण्डी री भीत माथै पग धरन बिना पगोथिया री इण

छान पर जिया निया पूग जावा अर अेक बीज रा गूदड़ा बिछावणा ई ऊपर गाच लेवा। बस पछ रात हुव तारा हुव, चान्णपरा मे चान हो हुवे अर नित री बासी हुयोड़ी गाना लिया म्है हुवा। आ बाता मे नौकरी, इश्तहार, सिनेमा, अर लड़ाई झगड़ा र अलावा ई चर्चावा चाले जकी अठै लिगणी मुनासिब कानी। हा, सखेप म वात आपा स्त्री पुरुष सवधा री गुप्ताऊ वाता केय सका।

नित री आ बासी बाता मू ज थोड़ी घणी उबताहट हुव, तो वा फक्त म्हार माय ही लाघ सक, पण म्हारी आ उकताहट ओजू इत्ती अभि जात नी क अठै रेवणो ई असम्भव लखावण लाग जाव।

आज सिझ्या देवधर रै अणमणै जावणै सू म्हारो मन ई की अणमणो ही हा। मैं रोटी पाणी जीमन बार निकळग्यो हो अर पाछो आयो जित्तै सगळा भाई लोग छात पर पूगग्या हा। पप ड्राइवर अेक हरियाणवी राग गाव हो जक री भाईड़ा की अणूती दाद देव हा। ल्खावै हो कै तारा रै उजास म सगळा आप आपर मन री गाठा खोल खोलनै बिखूरै हा। हरि-याणवी राग आप री जिण बिल्दड़ी सारू ओळखीज, ठीक वो ई स्वाद पप ड्राइवर र गीत रो हो, जक न कोई और विशेषण भी दिरीज सकै।

मैं म्हार बिछावणा चुड सू की निरवाळा बिछायो अर इण मौज मस्ती म सामल हुवण री मनवार हाथाजोड़ी सू पाछी करी।

थोड़ी दर हुयी के गळी रै बी पारआल आपर घर री छात पर ऊभनै वकील सा'ब एतराज करया कै आ कोई भला मिनखा रो तरीको है क डागळा चढन रौळो कर।

'चुप मरा ?' गावण आळ अर सुणनआळो। केयीजणआळी इण रीसाळू आवाज पर मैं चिमकग्यो। आ आवाज देवधर री ही। मनै अचभो हुयो क देवधर इण तर चीख भी सकै।

'देवधर" मैं हेलो करयो, "तू अठी नआय जा ?"

पण वो आजू सगळा न चुप करणा चाव हो।

'इण वकीलड़ री तो मा नी !" आ उक्ति किण ई अधारै मे भाळ

री गळाई चलाई ।

"देवघर ।" मैं फर हेलो करयो ।

अवक वी सुण्यो अर मैं देरयो क वो आवै हो । इत्ता उजास नी हो क वीर चरै री लकीरा दीखती, पण अधार म चाल्त वीर डील र पाण ई रीस लखाव हो ।

देवघर खैजड री टूटोडी डाळी री गळाई म्हार बिछावण पर आय पडयो ।

"अ रोळा करै तो थारो काई लेवै ! तू क्यू लोही बाळ यार?" मैं वीन सायत देखण सारू कयो ।

वो की नी बोल्यो । मैं वीनै गौर सू देगण लागग्यो । देखणो काई, हू वीर मौन मे की सुणन री चेष्टा करी । दूज कानी राग खतम हुयो अर ताळया बाज ही । वकील सा'ब छवट पग पटकता थका नीच चल्या गया हा ।

तन रागा चाखी नी लाग !" मै पूछयो ।

'भइसा मैं तग आगग्यो पण जाऊ कठ ?' दवघर पडूतर न्यो ।

'कठै जावणो चाव तो तू ?"

"भईसा, इण सू तो ठीक हो क टाटा करावनो माटी खोदतो अर मजूरी करतो ?"

मैं वीरी सीग पूछ बायरी बाता सुणनै अचू म मे पडग्यो ।

"भइसा, मैं साचाणी तग हुयोडो हू ।' वो फर ई चीखता सीक

बोल्यो, "था सू बात करणी चाई, थ ई हैंसण लागग्या ।'

"देवघर, मन निग ई नी कै काई बात है, पण मैं कोई हळकी पतळी केयी हुव तो माफी दिरावज वीरा ?" मैं उणन पतियार म लेवण सारू साफ मन सू माफी माग लीवी ।

वो फर ई चुप ।

हा, याद आयो देवघर तू पूछ हा के मर्‌योड़े सिरकार नौकर री औलाद वा काई बात ही बोल ?' मैं अचाणचक सिझ्या आळो प्रसग उठायो क वा इणी र नेड तेड उलडग्यो हो ।

'भइसा, मैं ई हू वा औलाद ?' वो बोल्यो ।

'तू ?'

'हा, म्हारी मा सिरकारु स्कूल मे चपरासण ही ।'

'पण अबै इण सू काइ हुयो ?'

'मैं नौकरी लागणा चावू मन इत्ता दिन निगै ई नी ही कै नौकरी करता करता मरण आळ सिरकारु नौकर री औलाद न सरकार नौकरी देय दव ।'

'हा यार आ तो सही है, म्हार आपरै दपतर मे अेक अडो ई मामलो है । मैं हामळ भरी ।

'आ साची है भइसा ?'

'हा, भई ।'

उठीन भाई लोगा र झुण्ड मे हेसी रो तूफान आयो जाण ।

तू तो मास्टरी री ट्रेनिंग कर नी ।' मैं कैयो ।

इणमे तो अेक बरस और है ' वो जाण किणी कुव माय सू बोल्यो हुव ।

'तो इत्तो तग क्यो हुवे देवघर अगर कोई रस्तो निकळसी आपा अवस निकाळसा ।

'भइसा ' वो फर बोल्यो 'थे नी जाणो मन अब नौकरी री सख्त जरत है बापूजी नै रिटायर हुयां ई केई दिन हुयग्या अर वान जित्ता मिल्या वो बेना रै ब्यावा मे पूरो हुयग्यो व किसा फर अफसर हा चपरासी री पेंशन सू गुजारो ई नी हुव, फेर म्हारो ओ सर रैवणो अर पढणो बापूजी केवै क गाव आळो घरियो बेच देवा अर बाप वेटो अठ इ भाडै रै घर मे पड्या रेवा खेत तो पली ई गयो ।' देवघर बोलता बालतो हाफणी चढग्यो अर विसाई लेवण लागग्यो ।

'देवघर थारा पिताजी भी सिरकार नौकर हा ?' मैं पूछ्यो ।

'हा, पण मनै काल ई ठा पडी। नौकरी इण आधार पर ई मिल क मिरकारु नौकर आपर नौकरी र टम मे ई मर जाव तो मैं उण मा रो बेटो हूँ '

देवधर रो क्वणो हो क वी कन अेक ई रस्तो है क सरकार वीन इण आधार पर नौकरी देव क वीरी मा चपरासण ही अर नौकरी मे ई मरगी ही।

'भइसा, काई हुयो मन पढायनै इण सर री हवा खाय खायन मैं मैनत मजूरी सू ई गयो 'देवधर थोडी देर थमनै फेर बोल पड्या।

अबक मैं चुप। मैं काई कैंवतो। देवधर जाणै आपर मु हड सू म्हारी बात ई केव हो फरक फकत इत्तो हो कै मन भटकता भटकता अचाणचक आ बाबूगिरी हाथ लागगी। मन लखायो कै म्हारी आ अमीरी अर ओ ई बडावलोपण हो, जक री देवधर कन इत्तो काण कायदा हो।

देवधर अब चुप हो।

मन इण मौक पर ध्यावस बधावण सारु घणी बाता सूझ ही पण मैं वानै केय नी सक्यो, चुपचाप देवधर री अधार म लीलिज्योडी थाकृति म वीरो चेरो सोधतो रयो।

'भइसा थे थार दफ्तर र वी मामलै री पडताल करघा। मन मा र कारण नौकरी मिल सकै नी ? मा स्कूल मे चपरासण ही। वीने मरघा बारै बरस हुया है क्ठ ई इण कारण तो पण वी टम मैं छोटो हो नी! स्यात इण मामल पर बिचार अवस हुय सक भईसा उण टम तो मा रो कोई टाबर जवान नी हो अब मैं हूँ तो सरकार क्यू कोनी नौकरी देव ?'

देवधर बोलतो बोलतो थमग्यो पण उठीन भाईडा ठा नी किण बात पर अेकर ओर जोर सू हँस्या। मैं उठीनै देख्यो। वकील सा ब र गळी मायल कमर रै रोशनदान सू झाकतो उजास गायब हुयग्यो हो। स्यात व सोय चुक्या हा।

भाईडा नै हेसण रा दौर सा पड रया हा। चा री हो हो आभ लग पूग रयी ही।

देवधर र कांधै माथ मैं हाथ धरघो। वो निढाळ हुय न आपरो माथो ऱ्हाख दियो। मैं वीरा केसा मे हवळ हवळ हाथ फरण लागग्यो।

देवधर अेकर ओर माथो उठायो अर हवळ सीक बोल्यो 'भइसा, म्हारी मा स्कूल म चपरासण ही '

• • •

सुपनो

मास्टर गंगाराम आपरै चेला नै चोखी तरै रटाय दियो, पण छवटली तसल्ली करण सारू टैसण रै नडै पूग्या पछै वी सगळै ड्रामै री अेकर फेरू रिहर्सल करी। वो अेक भाट माथै चढग्यो अर ढक्या उग्याडा चाळीसेक छोरा नै पूछ्यो।

'हा काई बोलणा है ?'

'जगळधर बादसा री जै !'

'और ?'

'खम्मा खम्मा अन्नदाता !'

'सब्बास !'

मास्टर नै तसल्ली हुयी अर वी छोरा नै साबासी दे हाली। फेरू नीचै उतर'र आपोआप बोल्यो, 'राज री मेरबानी हुय जावै तो एक सिर कार स्कूल खुल जाव। आ अणभागी टाबरा री भलो हुय जाव।'

मास्टर गंगाराम नै जद ई समाचार मिल्यो 'क महाराजाधिराज री स्पेशल गाडी उठकर बगसी अर इंजन मै पाणी लेवण सारू इण गाव रै टेसण पर रुकसी तद ई वी आ मसूबो बणाय लियो। जिका छोरा केई दिना सू नीं आय रया हा वान आप खुद जाय'र बुलाया। वारै माईता नै पतियारो दियो 'अन्नदाता पधारै है, मैं छोरा नै लेय'र जावूला अर जै बात रै अरजी करूला'क राज अठै स्कूल खोल, सिरकारी स्कूल ?'

'राज री स्कूल कद हुवै, मास्टर ?'

'अरे, राज री स्कूल रो खर्चो राज देवै मैं अबार सान म छव महीना आय'र थार छोरा नै दो आख लिखादूं थे मन इण सारू रुपियो धेलो देवो हो नी, पण पछ पईसा नी लागला अर भणाई ई थितू बारामास हुवैला ।' साव गांवेडी लोगा न समझावणो दोरा हो, पण मास्टर र हिय म सिरकार स्कूल रो सुपनो ठाडो हो ।

मास्टर रै बाबत इण गाव रा लोगा न जिनरी जांणकारी ही वा आ 'क वो साल म छव महीना काई ठा कठै सू आव अर गाव रा टाबरा न पढाव, सेठ हरखचन्दजी री हवेली र बरामद म वीरी पोसाळ लाग जठ इण गाव र साग साग पड़ोसी गावा रा ई टाबर आवै । इण मास्'क छोरा पढणन आवै मास्टर आप घर घर पूगै । वो कन इण दब अब ताई चाळीस-पैंतालीस छोरा मास्टर री पोसाळ म आवण लागग्या । अर आई छोरा न मास्टर तोतारटत करा दियो 'खम्मा खम्मा अन्नदाता !'

++

अबै गाडी पूगण म थोडी ई जेज ही ।

तेल री चिमन्या धर'र जगणआळा दो लेम्प पोस्टा अर पाणी खातर चिणीज्योडी अेक ऊंची टकीआळ इण टेसण र फुट भर ऊंच प्लेटफारम पर आज नजी की गावा र ठाकरा री खासी हलचल ही । टेसण सू कोस कास भर ताई रात सू ई पाणी रो छिडकाव करीजग्यो हो । रेतीला टीबा आळै इण इलाकै सू हुय'र जद ई महाराजा री स्पसीयल गाडी बगती इया ई हुवतो । इत्तो पाणी ई बात पर खच हुवतो 'क घोरा री धूड नी उड । इण गाव सू ई नी, नजीकी गावा सू ऊंटा पर पखाला पखाला पाणी आवतो अर मैंग गवेडी छिडकाव मे लाग जावता । ठाकरा री सवारघा उतरती । सज्या सवरघा ऊंटा री कनारा, बदूका री सलाम्या अर चौफेर खम्मा अन्नदाता री जैकारा । इण सून गाव री हरमेस सूनी पडी रैवणआळी अ पटरघा जाण तीरथ बण जावती । दूर दूर ताई लोग लुगाया रेल देखण रा कोड करता पटरघा र किनारै हाथ जोड'र ऊभा रवता । रेल बगती अर गुहार लागती, 'खम्मा अम्मा अन्नदाता ।"

पण इण सबर बावजूद मास्टर नै आपर चेला न महाराजा रो अस्तित समझावण म खासी जेज लागी ।

कठैई अळगी सीटी सुणीजी अर हलचल तेज हुयगी । मास्टर किणी टाबर रा पट्टा सवारघा तो किणी रो सेडो पूछघा । याद राखण री ताकी करतो वान कतार म करण लागग्यो ।

बारुद भरयोडी बदूका गरजी अर सीटी रै साग सागै इजन री भक चक ई सुणीजण लागगी।

रतील इलाके र कारण रल पर गद जम्योडी ही। पण तद ई लार आग रा साधारण डब्बा बिच साही डब्बो छानो नी रयो। इण डब्ब मे अन्नदाता रा हुवणो त हो। ठाकरा री भीड जकारा करती डब्ब कानी भागी।

मास्टर आपर लार कतार म चालता छोरा न लिया डब्ब कानी चाल्यो। पण वीर पूगत पूगत ठाकरा साही डब्बै रै फाटक आग घेरो देय लिया।

छबट फाटक खुल्यो।

पली तीन-चार सिपाही कूदघा अर आपर इलाक मे अणहूत राव सू दोलडा हुयोडा ठाकरा नै धक्का देय देय'र, लार सिरकाया। मास्टर ठाकरा र इण अपमान पर अचूभो कर हा क महाराजा धिराज फाटक मे प्रक्ट हुयग्या।

'जगळधर बादसा री ज !"
'महाराजाधिराज री ज !"
सम्मा अन्नदाता!"

प्लटफाम पर जकारा रो पार नी हो। साही पराव म सज्या सवरघा भारी भरकम सरीरआळा महाराजा आपरी मूछ्या र नीच हवळ सीक मुळक्या अर हाथ सू सायत हुवण रो इसारो करघा।

अब मास्टर रो धीरज हाथ बाथ नी रयो सग चुप हुवत ई वी आपर चेला न क्यो, बोलो!

अरर फेर जकारा सुणीजी, पण मिया गळा सू दारी दारी बार आवती।

'चुप मरा र कगला।"

अब ठाकर मुड र मास्टर न धक्को देय न्हाख्यो।

मास्टर न पडत न छोरा सभाळनै री दरकार करी। ओ नजारो र्या'र छारा री जीभां ताळर चिपगी।

"कुण है अ?" अन्नदाता खासी मुलामसियत साग पूछ्यो।

गुना माफ करावा अन्नदाता! आ मास्टर है कठ सू आव की निंद नी पण गुनो है आ छारा न महात्मा गाधी री ज बालणी सिखाव।"

मास्टर अपमान री पीड नै पपोळै हो'क आपरै परिचै म कइज्योडी आ बात सुणीजी । वो आप ई नी जाणता'क महात्मा गाधी कुण है अर वीरी ज क्यो वोली जाव !

"खम्मा खम्मा " वीरा बोल होठा र माय माय फड फडाया ।

' सिपाया ! पकडलो सैंगा न विद्रोही है साळा ! ' अन्नदाता री कडकदार आवाज दूर ताइ गू जी ।

अर ठाकरा री भीड नै चीरता राज रा सिपायी मास्टर कानी झपट पडया । इत्ती देर म दूजा डब्बा सू ई सिपायी भागता पूगग्या । अेक अेक जणो दो दो तीन तीन री गिणती म छोरा न बाच लिया ।

इजन म पाणी भरीजग्या हा ।

ड्राइवर सीटी दी अर अन्नदाता रीस म पग पटक्ता डब्ब म अ तरध्यान हुयग्या ।

माटस्र साग गिरफ्तार हुवण आळा छोरा रा माईत कठई दूर खडया अ नदाता री जैकारा गुजाव हा ।

लाल भाट म चिण्योडी भीता ! ऊची छात अर लाम्बो चौडो दालान वीर लार अक ठाड कमर मे मास्टर अर वीरा चेला अेकठ ई रोडीज्योडा । मास्टर थर थर काप ! आज अवस वीरी जीभ काट दी जावला ! सागै आ छारा री ई ! मास्टर आपरी उगघोडी आख्या सू छोरा सामी देखतो पण देखीजतो नी । कुण है ओ महात्मा गाधी ? मास्टर आपरै चेतै पर जोर देयन थाकग्यो कठई ओ अग्रेजा री गुलामी मू देस आजाद करावण आळो क्रातिकारी तो नी है ? मास्टर न चेतो आयो'क वीर गाव मे अेक दिन अेक आदमी आयो अर ओल छान गवेडया मू मिल्यो । पण ठाकर सा न बात री निग हुयगी जणा वो आदमी छाई माई हुयग्यो वीरी केयोडी वाता माय सू मास्टर अेक ई बात सुणी क देस पर अग्रेजा रो राज है अर अ राजा महाराजा वान मदद कर पण सैंग बाता खुलामा करण सारू वीरी हिम्मत नी पडी क्यो क वी आ ई सुणी क ठाकरसा गवेडया नै अडी बाता म पडण सू खबरदार कर दिया हा ।

कुण है ओ महात्मा गाधी ?

मास्टर सोच हो अर सोच हो'क जे ओ आदमी महात्मा है तो फेर

अन्नदाता वीरो नाव लिया जीभ क्यूं काटला ! अर ओ फैरू कोई है तो ई वीन काई ? मास्टर आपर कासी जाय'र आयोडा बापूजी भ नै सू-आक लिख पढलिया हा अर बापूजी री सीख मुताबिक'क विद्यादान उत्तम दान, छोरा न पढावणो सरू करयो हा। अर पढावण न वी कन्न हो ई काइ ! पण वीन आपर इण दान र बदळ रिपिय घेल री आवत ई हुवण लागगी, इण सारू वो आ घ धो भोळा लियो। पली आपरै गाव म ई सरू करयो, पण वठ पार नी पडी तद अठीन आयग्यो। अठ ई वी सुण्या'क राज री तरफ सू ई स्कूला खोलीजै अर राज मास्टरा नै तणख्वाह ई देव राज री मास्टर बणन री सुपनो वीरी आख्या दिन धवळै ई देख लियो हो।

मास्टर रा काळजो बठण लागग्यो। वो आपर सैग देवी देवतावा न सिवर लिया। आपर मास्टर री आ हालत देख र भाळो डाळो रुखमो सामी आय ऊभग्यो। वीर चेहर सामी देखताई मास्टर री आख्या म पाणी तिरग्यो।

'मास्टर जी आपा घर कण चालसा ?" रुखमो पूछ्या।

"रुखमा !" मास्टर जाण डूबता डूबता तिणकलो पकडयो, "आपा न राज कानी सू सजा दिरीजसी ।"

"क्यू मास्टर जी ?

"कोई अेक महात्मा गाधी है वीर कारण बोल मैं थान कदैई इण री ज बालणी सिखाई ?"

"नी तो।"

"पण अन्नदाता न कुण केवला ?"

"मैं केवूला मास्टरजी।"

मास्टर रुखय री नियम सुर सुण'र अचम्म हुयो, पण नट ई वी र माय सवाल खडो हुयो'क अब पूछला कुण ?

बार गुन्नार सुणीजी। अन्नदाता पधार हा। मास्टर डरपीज्योड कबूतर दाई भेळो हुयग्यो। थोडी जेज पछ रखम न खेंच'र छाती र चेप लियो। बाकी चेला डरू फरू हुयोडा ऊपर झाकण लागग्या।

जूत्या री चड चू नडी आयगी जद मास्टर डरता डरता आख खोली। सामी अन्नदाता खडा है। अन्नदाता र दोना पासी दो सिपायी। मास्टर री आख्या खुली, तो खुली ई रयगी। न वीरा हाथ जुडया अर न गळ म ऊडी जीवती जीभ सभळी।

"क्यो मास्टर   अ है काई थार गाधी याव रा सिपाही ?" अन्नदाता गरज्या ।

"स् स सा !"

'सा सा काइ र ! आन तू महात्मा गाधी री ज बोलणी सिखाव ?"

मास्टर सू जबाब नी दिरीज तद ई रुखमो बोल जावै, "नी मास्टर जी म्हान जगळधर बादसा री ज बोलणी सिखाव !"

रुखमै रे तीख अर निरभै सुर सू अबकै अनदाता चमक्या । मुड'र दरुया तो सामी झूठ सू चिग्घोडो भोळोडाळो रुखमो हो ।

"हाऽऽ "अनदाता रुखम सामी की नरम पडथा" और काई सिखाव थानै ?"

'सिखाव" क अन्नदाता री ज !'

'और ?"

"महाराजाधिराज री जै !'

'और खम्मा खम्मा अन्नदाता !'

"और ?'

"और क' अन्नदाता गाव म स्कूल खोल देसी आपा चाळ र अनदाता री ज बोलाला !"

रुखम र जबाबा सामी अनदाता जाण छोटा हुयग्या । आख्या ऊची कर र की देर सोचता रया फेरू अचाणचक मास्टर सामी देख'र बोल्या, मास्टर, म्हान तसल्ली हुयगी, पण याद राखो म्हान इण महात्मा गाधी रो नाव दर ई नी जचै !" फेरू अनदाता रुखम कानी मुड्या, वाह र छोरा ! तू तो भोत होसियार है त न काल वी ई गाडी म थार गाव पूगा देवाला !"

अनदाता मुडया अर बार निसरग्या । दूर दूर ताई गुहारा सुणजती रयी ।

मास्टर रुखम न छाती र लगाय लियो ।

☐

वा ई गाडी

मास्टर आपर चेला साग गाव आव हा। अ नदाता रो खास फरमाण हुयो क छोरा अर मास्टर न पाछा साही गाडी सू पूगाया जाव । छोरा सगळ मारग उछलकूद करी, पण मास्टर साप र सू घ्योड दाई चुपचाप

बठयो रयो। वो कठई दूर झाक हो, पण साग ई छारा रै माइता रै ओळमै री चित्या ई सताव ही।

गाव आयग्यो। सुनसान टेसण सू मास्टर चेला न लेय र मारग पकड लिया। अेक जण र मास्टर न देखताई रोळो सो मचग्यो। बाबा डाक सू समचार इण तर पुग्यो'क थोडी ई जेज म सैग छोरा रा माईत भेळा हुयग्या। आप आपरै टाबरा नै चाखो तर निरख्या पछै वान मास्टर री सुध आई। ब मास्टर सामा दरया अर काई ठा कुण पलोपोत बाल्यो, 'ठाकर सग्रामसिंघ जी री ज।"

फर जकारा गू जण लागगी।

जकारा थमगी जणा मास्टर नै निर्गै पडी'क बीरै छारा समेत गिरफ्तार हुया पछ गवडी इलाक रा ठाकर सग्रामसिंघ जी कनै पूगग्या हा। ठाकर साब नगदी दा हजार अर पाच ऊटा रा जुर्मानो वसूल'र वान राज कानी सू अभयदान दे दियो हो।

'अरे, म्हान ठाकर सग्रामसिंघ नी छुडा'र लायो ।" मास्टर गळ री सगळो जोर लगाय'र केयो।

किया नी ? 'काई पूछयो" सेठ हरख चद सगळ गाव कन सू रकम भेळी कर'र, पाँच चोखा ऊट लोगा री बाखला माय सू खो'लर ठाकर साब न पुगता करया है अर दिनू ग ई अबस ठाकर सा'ब दरबार म पूग्या हुवला।"

"नी ।" मास्टर फेर ई घणा जार लगाय'र बोल्यो जाओ, ठाकर कन सू थारा ऊट पाछा लावो म्हनै ओ रुकमो छुडाय'र लाया है।"

"काई ?" इण अणविस्वास जोग बात सू चौंकेर सून बापरगी।

मास्टर न लाग्या'क सगळ मारग था इण जिसी कोई बात र नड नड इ माच हो। बीन लाग्या'क बीर पेट मे की उमट रयो है वो रीस म तप र बोल्यो, 'म्हन ठा नी'क आ मरा मा गाधी कुण है पण ओ अनन्नाता राखस है अर ठाकर राखस रो बाप।"

मास्टर पग पटक'र अेक कानी बईर हुया।

"मास्टरजी, सिध जावो ?" काई पूछयो।

'महात्मा गाधी न सोधण न।"

अर मास्टर तद री गयोडो आज तक पाछो नी आयो है। कठई मास्टर किणी नू वो खोज म तो नीं लाग्यो है ?

• • •

मालकण्यां

वा दोवा री बाता सू मन आ तो ठा पड ई गयी क व मिसेज फला अर मिसेज फला है बारी बाता सू ठा पड्यो क वँ जकी जात विशेष री है, उणमे बीनण्या रो घणा लाड कोड राखीज। जिया क अेक जणी बोली– सुणो आपणी जात मे इत्तो तो सुख ही है क नूवी बीनण्या कनै सू सासुजा घणो काम नी कराव। चूल्हो चौको तो बरसा ई नी करनो पड। सासवा केव बीनणी लाया हा काई नौकराणी थोडी ई।"

फर घर म कमरा कूलरा अर फ्रिजा री बाता चालगी। मन अफसोस हो तो इत्तो कै अ पल दर्जे री मुसाफरण्या आज इण साधारण डब्व म जातरा क्यू कर रैयी है! खैर मैं बगत काटण सारु बारी बाता म घिणाण दिलच स्पी लेय रैयो हो, कारण क वँ इत्ती जोर सू बोल रही ही क म्हारै सू किताब पढणो मुस्कल हुयगी।

अब बात पगाव सू चाल'र 'सर्वेंट लोगा (नौकरा) तक पूगगी। इण विसै पर खासा दूर चाली। मनै नौकर राखण रो काई निजू अनुभव हो नी सो की स्वाद ई आयो। जिया वँ बाता करी नौकर एडवास लेय'र भाग जाव व झूठा अर मक्कार हुव चोर तो इत्ता क बतण माजण रो पावडर नका'त पुडचा बणा'य लेय जाव!

आ बाता रै चालत ई स्टेशन आयग्यो। मन्न अठ उतरणो। उतरती बगत मे देख्यो क वा दोवा सू अक म्हारै साग ई उतरी है। इण र पछ मैं म्हारो मारग पकड लियो।

मनै तोपनीवाळ रै घर जावणो। ठिकाणो काढयो अर टेम्पोआळ न

बनायो। वो अळया गळया करतो सागी ठिकाणै पुगाय दियो । सिझ्या रो बात। तोपनीवाळ घर ई हो। मैं अर तोपनीवाळ पुराणा भायला। केई दिना सू इण नू व सर म आवण रो वीगो नू तो हो। वो अठ अक अध विचलो सीक अफसर वण'र आयो हो अर भाडै र घर मे रवतो। अक कानली बाजी म मकान मालिक अर दूजी म तोपनीवाळ।

स्यात घटा भर बीतग्यो। बार टेक्सी रुकी। अर थोडी देर मे ई मैं दब्या क नौकरा र पावडर चोर र लेजावण रो जिक्र करणआळी, वा दोवा माय सू अक मिसेज फला म्हार सामी कर निकळी।

'अ।" मैं पूछयो।

'आ म्हार मकान मालकिन री बीनणी है।' तोपनीवाळ कामचलाऊ ढग सू बोल्यो।

'जणा अ तो खूब पइस आळा हुवला ?" मैं फरु पूछ्यो।

"हा, इयाई समय ल भलाई।"

"नौकर चाकर ई राखना हुवला ?"

"नी तो !" अचक तोपनीवाळ चमक्यो।

मैं तोपनीवाळ न सगळी बात बताई। वो थोडो सोक मुळक्यो। फेर लगाम गैरो अर ठडा मीक हूसतो बोल्या– 'मन अठ रैवना घणा वगत नी हुया है पण मन इत्तो ठा है क इण घर म दो ही नौकर है। पलो इण घर रा एकमात्र हाणहार जको टेजरी न्फतर मे यू डी सी है अर दूजो, इण हाणहार गै मा जको इण हवाखोर बहू रा पूर तका'त धोव। रयी कूलर अर स्त्रि री बाता सा आ चीजा न ण मेमसा ब र कमर म लाग्योड छात पख म शामिल समझ ।'

मैं सक्त म आयग्यो।

सुण ! तोपनीवाळ फर बो'या 'किणी र दिलबहलाव पर अणूतो गौर नी देवणा चाइज। म इणन इत्तो बुरो नी मानू जित्तो ओ दीख "

मैं वा अजाण नौकरा रा चे रा सोचण लागग्यो, जका पर इलजाम हो क व पावडर चार र लेग जाव।

•••

हेमजी री रजाई

हेमजी हवेली र लारै चिडकल्या र पाणी पीवण न अक ठीबडो राख मेल्या है । ठीबड म उबरघोडो पाणी दिनू ग बरफ र रूप म लाध । सियाळो छक जोबन माथ है ।

इसो लाग क हेमजी अर सियाळ म धरमेला है । नी ता काई कारण है कै हवेली आळा सेठ अर लारलै कमरा म रैवणिया किरायदार बिछावणा मे सू हाल हिल ई नी उण वखत ताई हेमजी अेक वडी अर फाटघोडी धोती पैरघा फूस बुहारी काढ न हवेली रो काम सलटाय लेव, चूला चेताय दव अर जद ताई तावडो चढघा सगळा जणा उठ तद ताई वे सुस्तावण सारू बीडी सुळगाय न बठ जाव ।

हेमजी रा सगळा काम वेगा सरू हुव अर माडा नीवड । हवेली म जद कद ई वारी जरूरत हुव बरामद म ऊभ नै कदई वारी बेटी तो कदई बींनणी हेलो कर—' हेमा ! ऊपर आव ।'

उमर मे हेमजी नना नी है । बीस बरसा सू इण हवेली रा हाळी है पण अठ वे इणी नाव सू बुलाईज । हेमजी वाळा 'हेमजी' हुवता थकाई इण हवेली म तो वे 'हेमा' र नांव सू ई ओळखीज ।

यू वारी नौकरी ठीक व्हीज सक । नी वान हवेली सू कोई शिकायत अर नी हवेली न वा सू । हवेली रा सेठ आपर कारोबार अर धधवंपार रै कारण बारै दिसावरा म रव । वे साल दो साल री मुसाफरी करन घरा आव । पण लुगाया अठ हवली म ई रव । घर मायल काम काज सारू

दो दूजी नोकराणिया ई है, पण चौकीदारी सू लगायनै बाजारू सौदै सुल्फ ताइ रो काम हेमजी र जिम्मै।

हवेली र लारली कानी च्यार पाच कमरा खाली पड़या रैवता। लारल बरस सू सेठा वान भाड देवणा सरु कर दिया। सेठा रो कैवणो है क उणा आ काम भाड र लोभ सू नी हवेली रै लारली सूयाड मेटण ताई कियो है।

आ कमरा र छेड अक कोटडी मे हेमजी री माचली पडी रैव। सियाळा आया हेमजी लटाण माथ पडी आपरी रजाई उतारनै माचली पर नाख लेव।

हेमजी अेकल पडा हा। ब्याव हुयो ई कोनी। गाव म बडेरा र हाथ रो अक काचा पाको घर हो सो सेठा सलाह दीवी ' गाव आळो घरियो बेचन पईसा जमा करवाय दे। घर किसो दूध देव। पइमा रो तो ब्याज वध। हवेली म थार वास्त घणी जग। थारै जिसो भलो आदमी तो आज म घाल्यो ई नी रडक।"

हेमजी न ई सेठा री बात जचगी अर तदसू हेमजी इण हवेली रै लारली कोटडी म टिक्योडा है। पल पात आया जद सेठा वान अेक माचली, अेक बिछावणा अर अक रजाई भराय न दी ही। वा सागण रजाई आज लग हेमजी र साग।

लारल च्यार पाच सियाळा सू इण रजाई री हालत घणी खराब है। बरसा सू जम्योड मल री पापडिया सूख सूख नै झडै तो आपर साग रजाई री खोळ न ई झाड लेव। रजाई री कोरा ता छाई माई है ई, बिचालै ई वा चालणी वेजा हुयोडी है।

दिन म वान रजाई जावक चेत नी आवै पण सियाळै री लाबी राता मे जद ठड लाग तो नीद टूटती रव। सी सी करता वे सोचबो करै- ' सेठाणीजी न कवूला क म्हन अेक नू वी रजाई भरवाय देवै पण सेठजी तो इण सियाळ ई अठ नी हैं।'

लारल सियाल कह्यो तद सेठाणी बोल्या–' देख हेमा ! थारै हिसाब किताव रा म्हन तो की ठा है नीं। म्हीन बीस दिना मे वे आय जावै तो वान ई कय दीज " अर सेठजी रो आवणो लारल सियाळ ई नी हुयो।

कदई कदैई तो सी पोटा पोटा ई पड। हेमजी माचली मे पड्या गोडा छाती र चेप नै जळेवी बण्योडा सोच म अवकाळै तो ई

सेठाणी आगळ हाथा जोडी करन ई रजाई भरवाय लेसी । कई बार सोच कँ जे तू वी रजाई भरवाय नँ नी देव तो मायन सू कोई पुराणी रजाई काढ न देय द । इत्ती बडी हवेली मे अणथाग बरतण बासण माचा ढोलिया, सीरख पथरणा, कोई पार ई कोनी । पूरै गाव रा लोग ओ सामान मरण परणै माग'र लिजावै मैं तो अलपत हवेली रो हाळी हू म्हारा इतरा ई हक कोनी ?

आपरी पगार माय सू पईसा क्टाय नै रजाई भरावण री बात कवण री वारी हिम्मत नी पडै । बस गोडा छाती र चेप्या भात भांत रा विचार करबो कर । दिन रा काम काज र अळूझाड म अर तावड र निवास म रात री आ धूजणी चेत कम ई आव । पण रात पड्या हेमजी रा वे ई मसूबा वे ई विचार अर वा ई धूजणी ।

सियाळ रा दो महीना इणी भात बीत्या पण लाग क सियाळो अबक कुमत धारनै आयो । जठ सुणो उठ ई इण सियाळ री बाता ।

हेमजी हवेली रै लारै रवणिया भाडेतिया साग व्हासा रळता मिळता हुयग्या है । आज दिनू ग ई बान काम करता देखन मास्टरजी कवण लाग्या हेमजी की पर' ओढ तो लिया करो की नी ता थोडा तिणकला इ बाळ न तप कर लिया करो ठड किसीक गजब री पड है ?

कन ऊभा राधेश्याम बाबू ई बोल्या 'हेमजी मादा पडग्या तो कोई आडो नी आवैला इत्ता बेगा क्यू उठो भला आदम्या ? कितरी तिणखा मिळ थान ?"

ठड री बाता सुणन हेमजी न आपरी रजाई अणछक ई चेत आयगी । तावड ऊभा ई बान लखायो क वे आपरी माचली म पड्या है अर बान धूजणी छूट री है । मास्टर जी अर राधेश्याम बाबूजी री बाता वे हसन टाळ दी पण मन मे वार सळवळाट हुवण लागी ।

पैली अेक दिन तो औरू ई भूडी हुई । मास्टरजी री घर आळी जेक दिन यू ई फिरती घिरती हेमजी री कोटडी मे आयगी । रजाई देखनै वा खूब हसी अर दूजा वास्त ई हसण रो जुगाड कर लियो । उण रस लेय लेयन हेमजी री रजाई रा बखाण सगळा आगै कर दिया ।

हेमजी सुणी तो बान घणी शरम आई आपरी दुरगत माथ । दूजा न हसता देख र वे माय रा माय कुढीजता गया—' थ इण रजाई न देख'र हस सको मैं तो इणन बरसा सू ओढ रयो हू नू वी कठ सू लावू इत्ती

पीड है तो कोई आपरै व ो सू काढ े ओढण सारू देवो देराणी"। अर आपरी परबसता र कारण हेमजी माय रा माय बळ'र रैग्या।

इण घटणा रै पछ हेमजी केई दिना ताई अणमणा रैया। रात न सोवता तो वान आपरी रजाई अणथाग भारी लखावती। मन मे विचार करता–'म्हन अेक रजाई सारू इण भात मूडा तावणो पडै कोई म्हारी बात नी राख।—मैं तो म्हारो सगळा विस्वास ई इण हवेली म मेल राख्यो है आखी जिदगाणी अठै गाळ दी आनै ई आपरा समझ्या सेठा री छोरी न गोदी म ऊचाय-ऊचाय नै बडो करी आज वा न्यावजोगी होयगी छोरी ता छारी, सेठाणी खुद मैं आयो जद छोरी सीक ही। मिनख रै मन म की तो मोह ममता हुवणी चाइजै।

इण भात सोचता सोचता वारै मन म केई नूवी नूवी बाता आंवती। वारो अरथाव ओ क इत्ता दिन इण हवेली री जिकी सेवा बजाई वा अकारथ गई मैं इण हवली नै आपरो घर समझ नै रह्यो अर सेठ सेठाणी न माईता सू कम नी जाण्यो म्हारी पगार काई है हिसाब किताब काई है कदई पूछ्यो ई कोनी। मुसाफरो करन आव जद अेकाध धोती जोडो अर बडो रो टुकडो सेठजी लाय देवै, इण उपरात इणा आज ताई म्हारै वास्ते काई करयो कियो ? मैं तन काट नै आरी सवा करी पण आनै जावक ई गिनरत नी ?

दिनूगै उठता हेमजी नै आपरो डील अकरासीज्योडो लागतो। उठना-बठना डील म चबका सा चालता। तद वानै अेक नूवी चिता लावण लागती–कठई गठियो बाव तो नी है ? किस्यो खोटो है ओ रोग ? नी उठीजै नी बठीजै फेर तो राम ई रखाळो।

गठियो बाव ढळती अवस्था मे ई हुव। आ सोचता हेमजी आपरी उमर रा दिन गिणै—दाणी कैवती के मैं रामरिखडी सू दोय बरस बडी हू। रामरिखी रा बरस गिणन वा मायनै दो जोडद्या तो आया दो कम पचास। अडताळीस! पचास मे फगत दोय घट। पछ तो इकावन सरू हुय जासी। दिन जावता काई वार लाग ? अर आज काल मिनख री उमर हुव पण कित्तीक है ? तो काई माचाणी ओ गठियो बाव है ? हेमजी र मन म सरणाटा छायग्यो। परलोक सुधारण री चिता ई हुवण लागी। सोचण लाग्या आनी जिदगाणी दौड भाग म ई बिताय दी। कदई माळा मतरई नी कियो। धरम पुन री तो बात ई कठ ?

रात रो दूजो पोहर बीतण मार्थं हो पण हेमजी री आख्या मे नींद कठ ? वान लखायो क किवाड र मायकर आवती डाफर डील म खीला सा रोपरी है ।

सिझ्या रा काई ठा कठै सू आकास मे बिना रत रा बादळ छायग्या। छाटा छिड़को ई होवर लाग्यो । अचाणचक हेमजी न लखायो जाण डील मे घूजणी छूटरी है । आज दिन रा ई वारो जीव सारा नी हो । हथाळी री पूठ सू आपरो गळो पपाळघा तो कोजी तरिया गरम हो ।

हेमजी होळ सीक उठघा । सोच्यो मास्टरजी रो कमरो खुलवाऊ । वांरै कन कोई गळी चोळी हुव तो रात सौरी कट ।

ज्यू इ वा बारणो उघाडघो हेमाळी पवन वारे डील माय कर आर पार निकळग्यी । बारै इसी घुप पसरयोडी ही क हाथ न हाथ नी सूझ । राम आसरै मास्टर जी र कमरै ताई पूग्या अर बजावण सारू अधार म साकळ मोधण लाग्या तो हाथ ताळा आयग्यो ।

मास्टरजी रो परिवार कीं दिना पली गाव गयो परो हो । तद सू मास्टरजी हर शनिवार न गाव जाव । हेमजी न इण बात री जाण ही के राधेश्याम बाबू ई अठ नी है ।

वे धूजता धूजता पाछा कोटडी मे पूग्या रात रो बखत जो मौसम अर ओ ताव भगवान जाण काई होसी । दोघाचिनी अर अणबसी रा जेवडा वानै ठौड दौड सू लपेटण लाग्या । दिनूग ताई आ ई हालत रही तो अवस मर जासू । वेम अर भय रा साप वार चाफेर लपटा देवण लाग्या ।

बार जायन की घोचा लायन आग सुलगावण रो मतो कियो । इण आसर तिणकल न डाग बणाय'र वे ऊभा हुया अर घोचा लायन तरतीब सू जमाया, हेटै सिणियो दयन तूळी दिखायदी ।

वासदै प्रगटता ई वे उतावळा सीक हाथ पग चलाय चलायन जाण निवास लूटण लाग्या । वान खुलो पड्यो बारणो चेते आयो तो उठन बद कियो अर पाछा आयने तापण लाग्या ।

थोडी ताळ मे घोचा बळने नकी हुया । हेमजी राख कुचरता रह्या पण वाने लखायो क इण भात घणी ताळ नी निभ सक । बारे जायने फेरू घोचा लावणा पडसी । पण बारे जावण री सोचता ई वाने घूजणी पेलो छूटगी । असवाडै पसवाड निजर पमारन बाळण जोग काई चीज सोधण

लाग्या। बीडी र वडळ रो कागद, माचे र नीच लटकना तांतण रा की धूणी म नाख दियो।

होळ होळ वासद बुभण लाग्यो। सेवट उणां आपरी रजाई रो कपडो रीस म आयन खच्यो अर धूणी र मीरा माथे मेल न पूं को देवण लाग्या। थोडो ताळ धुंवो हुयो पछ मप्प करता बागर उगग्या।

फरू हमजी बार नी गया।

वानै जाण मुगती रा मारग मिळग्या। पैलो कपडो अर पछ रूई, वे खाच खाच नै बाळता गया—"तू है ई बाळण जागी तन आदमा ता सी नी मिट पण बाळया तो मिटसी।"

उगणीस दिन

घुमावदार पगोथिया पर म्हे दोनू चढ रया हा । आ एक बक री इमारत ही अर अठै वो ही मन पकड'र लायो । कयो, 'देखो, थान दिखाऊ, आवो म्हार साग ।'

म्हे दोनू खासा देर सू सागै हा । म्हारी ड्यूटी रात री पाळी मे ही अर मैं दिनूग दिनूगकस्ब र बजार मे दाढी करावणन आयो । मैं दाढी कराय निकळ्यो'र का वो मिलग्यो । वो आज खद्दर रो कुडतो परघा हो अर नीच पजामो ।

'तू ही ठीक है । कदई ठसाठस जीण डाटघा अर कदई साव खादी ही ।' मैं वीर साग हुवतो कयो ।

वो हस्यो । दरअसल वो हसतो तो हमेस ही रव । पण अबार मैं उण र ठहाक नै ही हसी कवू । म्हारी बात पर वी खासा ताळ पछ टीका करी, 'गाधीजी मरघा पछी कयग्या खादी परो । वान किसी ठा ही क खादी इत्ती मैंगी हुय जासी । अब तो जद गाधीजी याद आव तद ही खादी परीजै । आज मन आया, सोच्यो थोडा सिद्दत सू याद करा । आ चोळो बणवा लियो ।'

मैं वीन खासा गौर सू देख्यो, वो जद भी कोई बात कव, मैं वीन इया ही देखू ।

फर म्हे उण होटल मे पूग्या जठ प्राय बैठा। अठै बठ'र वो मनै किताबा बाबत पूछण लाग्यो। वो हमेस ही म्हार सू किताबा बाबत सुझाव लेव। मैं वीन पढण रा सूत्र समझाय रयो हो। तद ही राधेश्यामजी आयग्या। वान नमस्कार कर अर आप आपरी ठौड पीगाणै भेळा हुवता वा खातर आदर जतायो पण जिया कै तय ही, वान म्हारी कुर्सी पर नी, खाली कुर्सी पर बठणा हो, व बठग्या।

'पी सी, थार उण मुकदम रा काई हाल है ?' राधेश्यामजी हाथ मायला अखबार टेबल पर धरता इया पूछ्यो जाण पी सी सू मिल्यां वानै दोय बरस हुयग्या।

मैं चिमक्यो। पी सी र मुकदमो म्हारै खातर साव नूवी जाणकारी। मैं तो अचम म अर पी सी फकत हसतो रयो।

'थार मुकदमो ? किसो मुकदमो ?' मैं खासो उतावळो हुय'र पूछ्यो।

'है, एकर कृषिमन्त्री र भतीजनै कूट नाख्यो।' पी सी आपर पतळ बूकिया पर घोळ री बाबा चढाय लीवी।

राधेश्यामजी, मन लखायो, म्हार साम इया देखता हा जाण सामान्य ज्ञान ही मन कीनो।

पी सी होटल आळ न तीन लस्सी रो कयो अर म्हार सामै देखतो जोर रो ठहाको लगावतो बोल्यो– थे मुकदमै रो पूछै हा नी ? कैवो तो विस्तार सू बताबू।'

म्हा सू पला राधेश्यामजी उथळो दियो, 'देख पी सी तू खुदन किण तर बदळ लियो। ए भला आदमी तनै इत दिना मे नी जाण्या ?'

'साचाणी मैं नी जाणू।' मैं बोल्यो।

'थे टेलीफान एक्सचेंज मे हो नी ?

राधेश्यामजी लिलाड मे सळ घाल्ता कयो।

'बिलकुल ठीक सा! मन अठै आया छव महीना हुयग्या अर इण करब म पी सी म्हारो पैलो भायलो है।' कय'र मैं पी सी कानी देखतो

मुळघणा । राधेश्यामजी बावत पी सी मनै बतायो क पढ्या लिख्या अर समझदार आदमी है ।

पी सी गतारा करतो मुड्तै री बावां हठी उतारी अर बोल्यो 'ये रगनाथन नी जाणो । सगळो झगडो वी सूं सरू हुयो । वो गरीब आदमी एक दिन दारू पीयोड़ो बस म चढ्यो अर बीडी सिलगाई । क वीन ठाक पीज'र बारै फेंक दियो । मैं बठै ही खडयो हो ।'

'तो थारै पर मुकदमो कियां हुयो ?' मैं पूछ्यो ।

वीन बार पड़ता देख'र मन झाळ ऊपड़ी । मैं, मोहन स्वामी अर पानू, तीना बूट-बूट बा रो आसळा कर दियो अर बस रा काच फोड दिया, हुवा काढ दी ।' पी सी ठरयो ।

राधेश्यामजी बाल्या, पी सी ठीक ही कव । उण बसत बो दस नवरी हो अर बस्ब म इण रा बाण बाजता ।'

दस नवरी ?' मैं चिमक्या ।

'थांरा चिमकणो वाजिब है ।' कवता व खासा ताळ आपरी गदन हिलाई ।

'फेर ?' मैं पी सी कानी देख्यो ।

'मौके पर थाणदार पूगग्यो । मन तो लखाव नीं पड्यो क म्हार सूं कसूर हुयो है । मोहन अर पानू भाग छूट्या । थाणेदार म्हार कानी बध्यो । मैं कया—खबरदार ! म्हारा नाव पी सी है । सब जाण ।

'पकडो स्साळन ! थाणदार म्हारी खुखार आवाज सूं स्तब्ध हुयग्या अर खुद लारै सिरकतो सिपायान कयो । मैं भाग्यो । आग मैं, लार सिपाई, थाणदारजी अर वा र लार हाऊ हाऊ करतो एक गडक ।'

मैं पी सी सामैं आख्या फाडतो हो ।

सातरा नजारा हुयो ।' वो ठहाका लगायग्यो, 'भागतो भागतो मैं ऊपरल बास आळ भैरू जी र मन्दिर पूगग्यो ।'

थोडो ठरघो अर गभीर हुवतो बोल्यो 'सरकारी मशीनरी बडी मदद करी। सोचो सरकारी मशीनरी अर आम आदमी री मदद। कित्तो चोखो लाग्यो मन। म्हार बठ पूगता ही बिजळी गुल हुई, जको उगणीस दिन मन गिरपतारी सू बचायो।'

'उगणीस दिन ? इत्ता दिन तू कठै लुक्योडो रयो ?' पी सी री बात म म्हारी दिलचस्पी खासा बधगी।

'बताऊ बताऊ!' वो होटल र काउटर कानी घूम'र हेलो पाडयो 'अरे भाई! लस्सी काई अमेरिका सू मगवाई है ?'

इत्ती देर सू चुप बठया राधेश्यामजी चट बोल्या, भाई पी सी थार ..तर तो लस्सी रूस सू आवणी चाहीज। अमेरिका री तू कद पीवण लागग्यो ?'

इत्ती म एक फूठरो फर्रो छोरो आय'र पी सी कानी हथाळी पसारी हैलो कामरेड! अबक मैं नी चिमक्यो।

पी सी न घणकरो क ओ ही सम्बोधन मिल। इण बाबत पूनताछ करया वा एक राजनीतिक भाषण देवणो सरू करद। इण मौक वो घणकर सबदा रो प्रयाग पलपोत करतो लखाव। एक्सचेंज आवता जावतो वा म्हार जिस रिजव नेचड रो कद किया भायलो बण्यो, अलग आश्चय री बात है।

छारा लस्सी देयग्यो अर तूवा आयो जको आगली मज री कुर्सी पर जाय बठयो। पी सो लस्सी रो गुटको लेय'र याद करतो सो बोल्यो 'थ पूछ हा नी मैं उगणीस दिन कठ रयो ? मैं अठ ही इणी सहर म रयो। वो राधेश्यामजी कानी ताकण लाग्यो। व की नी बोल्या तो उण बात बधाई 'भटकतो भटकतो तीज दिन भूखा मरता पाछा भरूजी रै मदिर पूग्यो वपू क पइसा म्हारै कन हा कोनी अर तो पछ पुलिस भाळा भळ लार लाग्योडा।'

तू लुकतो कठ ?' मैं पूछ्यो।

वो राधेश्यामजी कानी देखतो पूछ्यो 'थे गुलाब काळवेलियने तो जाणा ? पू पी बजा बजा सांप नचावणियो।'

'हां हां !' वैं कयो।

'सांप खायां सू मरग्यो वो। म्हारा धरमभाई हो। तीन दिन म उण रै डेर म ही लुक्योडो रया।,

'वो काळवेलियै र ?' अबकै राधेश्यामजी भी चिमक्या।

पी सी जोरदार ठहाका लगाया अर बोल्यो, 'वा दिन भर सहर म रैवतो अर एकलपो ही हो। आपरी अर म्हारी रोटी लियावतो। पण वीं दिन बीमार पडग्यो अर मन भूख लाग्योडी ही।'

'यू आर ग्रेट, पी सी, रियली ग्रेट।' राधेश्यामजी बोल्या, तू उण साप आळैने भाई वणाय राख्यो ?'

पी सी आत्मविभोर हुय'र ठहाको लगायो अर म्हार सामैं देखता कवणो सरू रयो, 'लुकतो लुकतो मंदिर पूग'र देख्यो क पुजारी परावठा बणाव हा म्हारी भूख हिडकणी हुयगी। मैं पुजारी सू दोय परावठा माग्या। वो नटग्यो क बत्ता कोनी। मन रीस आयगी सा उण बूढ पुजारी नैं मैं सागीडो जतरायो। रोवा कूक सू लोग तो भेळा हुवणा ही हा। दोय परावठा खातर बूढ पुजारीनैं ठोकणो मनै खासा नमनाक लाग्यो। मैं पुजारी नैं ठोक हो अर उतावळो हुयोडा साच हा क और कोई इलजाम भला ही आय जाव, रोटी लूटण रा इलजाम नी आव। अर सोचता मोचता, ज्यू ही लाग नेडा पूग्या, मैं आखिरी फसलो कर लियो। पुजारी र गळे मे एक पतळीसी सोन री साकळ ही। मैं लोगा ने दिखावतो बीन तोडी अर भीडन चीर'र भाग छूटयो। भीड मन चोखी तर ओळखती। म्हार नाव रा हेला पाडीजण लाग्या। पण गनीमत ही क कोई लार को भाग्या नी। मैं लुकतो लुकतो वठ ही जाय पूग्यो, गुलाबसिंह र डेर।'

मैं घडी देखी। फेर राधेश्यामजी सामैं देख्या। लागयो के व पी सी री बात सू खासा ऊबग्या हा। हालांकि मन खासा मजो आवैं हो,

पण अचाणचण घडी देखणी याद आयगी ।

'भाई पी सी इसमे आगे मुझे तो पता है ।' राधेश्यामजी खडा हुय'र बोल्या, 'आन सुणावो, मैं माफी चावू । मनैं जाणो पडसी ।' वै 'अच्छ्या' कयो अर टुरग्या । जावता जावता वे म्हारै सामैं, काई ठा क्यू मुळकग्या ।

'अबै काई सुणावणो ।' वारै जावतै ही पी सी बोल्यो, 'बात ही खतम हुयगी ।'

किया खतम हुयगी ?' मैं रुचि दरसावता कैयो, 'इण रो अरथ आ कै था पर दो मुकदमा हुयग्या ।'

'आ ही तो दुख री बात है मुकदमो म्हार ऊपर एक ही है । पुजारी री रिपोट र मुताबिक मन्दिर लूटण रो । उगणीस दिन पछै मैं गिरफतार हुयो तद ठा लागी क उण मार पीट री बात तो थाणे आळा रै चेतै ही उतरगी । ठोकीजण आळा माय सू एक भूतपूव सरकार र कृषिमन्त्री रो भतीजो हो अर दो सैरी ब दादा हा । खुद तो थाणै मे रपट दरज कराई का ही नी । सजोग री बात कै उण दिन थाणैदारजी घूमता घूमता वाकै घर अलटिपाऊ ही आय पूग्या । ऐ बाता मनै गिरफतार हुया पछ निगै पडी । थानै काई बताऊ ? थाण मे उण थाणदार मनै भौत ठोक्यो अर कैयो– हरामजादा, मनै खुदर नाव रो डर बताव ! मैं ठुकतो रैयो । सात दिन हवालात मे रय'र जमानत पर छूट्यो । अबै छव बरस हुयग्या, मुकदमो चालू ।'

'पी सी ! मनै विश्वास को हुवै नी कै तू म्हार सू मिल्या पछै ओ हा ।

वो एक ठहाको लगायो अर उठाय'र अठै ताई लेय आयो । मैं पगोथिया बिचाळै पूग'र पूछ्यो, 'आखिर मन बैक मैं क्यू ले जाव ?'

उथळो दिया बिना ही वो पगोथिया चढतो गयो । ऊपर पूग र वा एक काउटर सू हुवतो सगळ स्टाफ बीचकर निकळग्यो । एक ठौड ठर'र

काई ठा काई बात करी अर मैनेजर र कमर म कंइ ताळ रयं'र पाछा आवतो ही बाल्यो 'कानी, आज वो छुट्टी पर है ।'

'कुण ?' मैं पूछयो ।

'म्हारो भायलो ।' वो कयो अर पगोथिया कानी मूंडो कर लिया ।

मै उण री बैंक म भायलै आळी बात री खोज करी ता ठा पडी क बठ वी रो काई भायलो नी है । बीन बैंक आळा फकत इण सारू जाणता क वो कस्ब रो 'अखबार वाळो' है अर बैंक म वी रा अखबार आव ।

अब मैं राधश्याम जी सू मिलणन छटपटाव हो । मन लखावण लागग्यो के उण बाबत पूरी जाणकारी करणी भोत ही जरूरी हुयगी है ।

●●●

पण वा किसी मान ! मास्टर जी री सातू पीढ्यां री सरस्वाही मनावती जाणे ओलाणा अर आसीसा री बई बांच । मास्टर जी छाट वीन आवरी मीट सू देखी–ठौड ठौड कारूया देयाडो घाघरा, पण घेर पक्को नौ गज ! ऊपर कुर्ती कांचळी । अखूण्यां ताई परयोडा बिलिया, जिका बिचाळ हाथा पर मडयोडा गोदणा दिस । गोदणा म मोरिया पपया बिचाळ मास्टर जी नाव बाच्यो—रेंवती । मोटयार अर फूटरी पण मली काजी।

माथ रो ठांव धरत राख'र वा बैठगी । बठत ई बोली, "दखो मवर सा ! चक्कर आयग्यो पडू । आ छोरा रो बाप मरजावणो मार मार'र म्हारो डील ओसळो कर हारयो है ।अेर च्यारानी दे, बाबुडा । इयाई पान खाय'र थुकीज जावैला पण दियो धरम आडो आवला । थारै पुन री बेल बध। थारो ब्योपार बधँ । मगती नैं च्यारानी दे । '

मास्टरजी निगै करी । बीरी आख्या चमक ही । बुखार छोड'र थाक्ल रो ई नांव नी लखावै । व 'बोर' हुवण लागग्या । मता करयो क घलो पावलो देय'र वाढो आगडी ! जेबा सभाळी पण कोई सिक्को नी लाध्यो।

"खुल्ला कोयनी कठै सू देवू ? थार ख न है दस रुपिया रा खुल्ला ?"

"हैं मवर सा ! म्हा गरीबणी रै पल्ले दस रुपिया कठ सू लाध ? थारो देवण रो मन । देवणआळ रा तौर ई छानानी रव बाबुडा, थारी गुवाडी बध। मगती नैं रुपियो ई देय दे। ताव री घाली दो टम चाय पीवसू अर गोळीई लेवसू ।" वा दडाछट बोलगी ।

च्यारानी सू बीन सीधी रुपिय मे आवता देख'र मास्टरजी बिमक्या। खान रुपियैं रा लोट हुवता थका ई कूड बोल्या, 'अेकरो नी, दस रो लोट है ' पण पण मगती नीं सिरकी जद फेरू लारो छुडावण सारू केयो, "आछो, तो पाछी आवती लेय लीवी । अबार जा ।"

'पाछी गेजा खावती कणा आऊ मवरसा ! दोय पग लागसी, खुल्ला मगाय ई लो । '

ल थारी' आ मगती है का काइ लेणायत ! मास्टर जी न सुण'र रीस आयगी, 'तू चाल अठ सू भाग । आई घणी खुल्ला मगावण आळी। पढाई मे दखल मत कर ।"

मास्टर जी न रीसा बळता देख'र वा घणै जोर सू बोलण लागगी,

"भवर सा ! थार दासँ ऊपर नाक घसू । मगता रँ काय रो मोसो । काट क'र केवू , बूढी नी बोलू , दोय दिन हुयग्या टाबरिया न दाणो देख्या न "

इत्त म ई चुपचाप बैठ्या छोरा मायला अक बोल्यो, "सर । आ भोत बदमाश है नियां बिना नी जावैला थें की देय'र पिंड छुडाओ "

मास्टरजी रै क न खुल्ला पइसा नी । छोरा नै मास्टरजी निसकारो हालता कैयो, "चोखा भाई । था कन्न खुल्ला है तो देवो अेकर ।'

अेक छोरा गू जै माय सू बटवो काढ'र सभाळ्यो । इत्ती देर म अेक दूजो छोरो खासो उथपग्यो । भट ई जाय'र पइसो मगती र हाथ म मेल'र कयो, "गाव घणो ई पडयो है, जाय'र माग । अठै म्हारी पढाई खोटी मा कर !"

मगती हथाळी म पडय पइसँ न मास्टर जी सामी कर'र भाडती थकी बोली, "ह'रे ह, आछो दियो नाव कर मगत कन्ने सू मगता काई लेव !'

मास्टर जी सामी गर्वीजती निजर सू देख'र फेर बोली, "ओ भव-रिया पट्टा आळो देयसी ।'

चिनोक थम'र बीरो चूडी बाजो पाछो सरू हुयगो, "अेडा सागोपाग जुवान बाबुडा, थार गोळ मु हड रा बेटो हुव ।'

मास्टर जी लाई कु वारा ! आपर चेला सामी अडो बात सुण र लाज बारै चेरै आयगी ।

'बेटो कठ सू हुयसी ! आरो ओजू ब्याव ई नी हुयो ' अक छोरा मुळक्तो मुळकतो मगती री बात सुधारी ।

सुण'र मगनी झट ई बात रो रग फोर दियो 'अरे ! थारै गोरडी सरीखी फूटरी बीनणी आवै । राम जुवानी रा मातू सुख देव बण्या राव करतार !"

चौगाव माथकर बैवतो मास्टर जी रो अेक मिलतारू ओ रोळो सुण्यो जद फट'र आयग्यो । "नमस्कार जी काई हुव !"

मास्टर जी बीनै वठाव । बाता चीता कर पण ध्यान मगती पर सू हठ नी । वा स्याणी समझणी हुव ज्यू मास्टर जी न आग्रोड सू बाता करता देख'र चुपचाप बठी रेव । काई मजूर काम रो थाकेलो उतार अर बीडी पीव ज्यू ई वा आपरी अटी माय सू काढ'र दाता ऊपर मूसाक रा छोडा रगडण लाग जावै ।

'ई न क्यू वठाय राखी है ।'' मास्टर जी रो मिलताऊ छवट पूछ ई लेवै मगती सामो देख'र ।

''काई बताऊ ? अेक घटा नडो हुयग्यो खोपडी चाटता'' मास्टर जी दुखी हुयोडा बोल्या ।

''आ रोडवज आळा खेतरपाल जी री खास है '' मिलताऊ मुहडो नडो कर'र मास्टर जी न बतायो ।

'हूऽऽ ।'' मास्टर जी सुण'र अचभ सू भाटो हुयग्या । बारी फाट थोडी निजर मगती माथ चिपगी । बान मगती र फाटचोड गाभा म झाकत गोर डील माथ अचाणचक ई किना ई खेतरपाल जुळ–जुळावता दीखण लागग्या । वारी माठ रो था मो नी रयो । वै कुरसी सू उठग्या चाल भाग अठै सू म न ठा पडग्या थारा सगळा धधा पुलिस मे दय दू ला '

''बाबुडा, पुलिस मे क्यू देव र । हुया-दयाआळो मिनख दीख घेलो पावलो हाथ रा मेल देय दे मगती आप ई जासी परी ।''

'की नी है भाग जा ।''

मास्टर जी बीन खदेड सक इण सू पलाई अेक बिचली ओस्था आळी लुगाई मगती न सोधती मीक पूगी । वीन देखत पाण बोली 'तन घणा दिन हुयग्या है जबक म्हारी मोरी (खिडकी) म हाथ घाल्यो, तो हाथ ताड हाखू ली ।'

'अे जा आई हाथ तोडण आळी '' इत्ती देर रो मगती रो अर-दास अर नरमाई रो सुर अक्दम तीखो हुयग्यो । वा पाछा फिर'र बीं लुगाई र नाळा हुयगी ।

सँग जणा वा सामी गेरी गेरी निजरा सू जोवँ हा। सँगा र चेरा माथँ मास्टर जी न वेई कयास झळक्ता दीखण लागग्या।

मगती घूड म रमता दोवू छोरा माय सू अेक न झटक र सागी ई गादी ऊखण्यो अर दूजोड रा बावळिया पकड'र घीसती बईर हुयगी।

सँग ओजू मास्टर जी रै सामी सामी जोव हा।

•••

पुडिया

रुक्को सिरक र मायन आयो। सेवगजी नीची नाड करन दवाई लेवण सारू आवणिय न देख्यो, अर माय रा माय मुसळिजग्या।

इणरो अेक कारण है।

दिनूग सेवगजी बार लेजावणाळ अेक मरीज सारू पुड्या बाध हा, वो बगत अचाणचक ई अेक पुडिया काई ठा कीकर खुलगी अर दवाई पाटिय पर खिडगी। बस, तद सू ई वारो जीव ओजाट म हुयग्यो।

आया जद सू व बिना मन काम कर रया है। दवाखानो ब द करण र अेन बगत आयन आ पछपोनडा मरीज अघायो उण बगत व सोच रया हा क आज घर सू आवती वेळा सेवगण कँयो—"म नै तो आज अग्रेजी दुआई री टिकडी लायन दे न्या। चार दिना सू ताव म सीजू हू अर थे जका अक चिमटी री पुडिया लायन नचीता हुय जावो।

वीन दुआई देयन सलटायो र वा घडी रा टणका लाग्या—पूरा बारै। दवाखानो बन्द करण री बगत हुयगी। वैदजी तो पैला ई गया परा। लार री सगळी जिम्मेवारी सेवगजी माथ।

वई दिनू ग आयन दवाखानो खोल बुआरी दवै अर मरीजा रा नाम लिखण सारू रजिस्टर म लाइना पाड। इत्तो काम हुया पछ वै आपरी स्टूल माथै आय'र बैठ जावै। लवणभास्कर री पुड्यां बांधता रव। मरीज आव जद रुक्को देख'र दुआई देय देव।

दिनू ग री बगत ई अेक पुडिया खुलगी ही । ठानी वयू सेवगजी आपरी बाध्योडी पुडिया रे खुलण सू इत्ता अधीरा हुयग्या ।

इण सू पला कदेई अडी बात नी हुयी । सेवगजी रो ओ दावो रयो है के वे उमरभर म अेक ई तो काम सीख्या है—पुडिया बाधणो । घणी बार ई वे आपरी बाध्योडी पुडिया जोर सू पटकन केवता—"कोई हमी थोडी है जको म्हारी बाध्योडी पुडिया खुल जाव, अवस्था गाळ'र अक इ तो कारज करयो है ।

पछ व आपर इण धध म लागण री पूरी कहाणी अवस बतावता । सेवगजी रा बापू पुराणा वदजी रो इलाज करवायो हो । ठीक हुयग्या जर घणी चावणा सू क वेदजी हेठ रय'र मिनख बण जासी, व सेवगजी न छोरपण री ओस्था मे ई अठ छोडग्या । सवगजी घणी बार अफसोस भी कर के ज थोडा घणा ई पढयाडा हुवता तो आज न वेद बण जावता, पण वा तो रुक्के मे मरीज रो नाव माडणो ई नी सीरया । सेवगजी समवणा हुया जित गाव रो घर उजडग्यो । मा पला इ को ही नी बापू भी पूरा हुयग्या । गाव सू तो सीर ई चूकग्यो ।

सेवग जी काम मे मन लगायो । पुड या बाधण सारू कागद रा आटा घण कोड सू सीरया । छोटी–मोटी दुआया बणावणी ई सीखी । आज लग अेक आई काम है जक न करता सवगजी दर ई नी थक्या है । फिरचो मु हड मे रगरोळना व दनाटन पुड या बणायन ढिगली करता जाव तद साच ई बारी तल्लीनता देखण—सरावण जोग हुव ।

दवाखानो बद कर'र सेवगजी आज घणा ऊतावळा घर कानी टुरया । रास्त म बीडी काढ ण सारू गू ज म हाथ घाल्यो जद निग पडी क बडल पेटी तो हू दवाखान मे ई छोड आयो । गू जा सावळ सभाळया तो खुण खोचर म लुक्योडी चारानी लाधगी । व मतो करयो क नू वा बडल लेयलू । फर सवगण री बात याद आयगी । वी खातर आज पक्कायत ई अग्रेजी दुआई री टिक्डी लेवणी हुयसी ।

ठर ठरन वार मु हड आग सेवगण रो मु हडो फिरण लागग्यो ।

वै भात भात रा जजाळा मे उळझयोडा घर पूग्या । आवता अक पन्द्रे पइसाळी टिक्डी साग लाया । मतो करयोडो हो क टिक्डी चाय साग सेवगण नै दय देसू ।

दवाखानो धर्मार्थं चलावणाळा सेठा री हवेली म ई सेवगजी रवै। सेठा र लोभ क हवेली री रुखाळी ई रवै अर बगतो बगत झाडू–बुहारी ई हुवती रेव। घणकरा कमरा सेठा रा बंद करयोडा है। सेवगजी र रवण सारू अक दो आसरा इ खुल्ला हा।

व पगोथिया चढ'र आगण म पूग्या सेवगण अेक अधटूटी मचली म भेली हुयोडी पडी ही। सेवगजी नेड जाय'रवीरी नाड झाली। बास्ती री झाच सी लखायी। ताव जोर माथ हो। सेवग जी न की नी सूझ रयो हो। सेवगण ताव म काई ठा काई बेलै ही। सेवगजी रो मन हुयो क बीन हेलो कर र चतो कराव। पण त्रिणी तीज र मौजूद नी हुवता थका ई सस्कारा री गिरफ्त र कारण वै सेवगण न नाम लेयन हेलो नी पाड पो।

सवगण ओजू ताव म बेल ही।

सेवगजी कोई माफ अरथाव तो नी कर सक्या पण अेक दुख वान माय रा माय काटण लागग्यो। सेवगजी र कोई टाबर टीकर नी वापरयो। ब्याव हुया पछ रा बनीस बरस वार मुहड आग चितराम सा माडण लाग-ग्या। पाच–सात बरस तो व जाण्या के सेवगण रो पेट मोडो ई खुलला। पण छकड व अधीरा हुयग्या। घणा ई डारा करवाया। पुराणा वैदजी केई योग भस्म्या ई खुवायी। पण सैंग अकारथ ठेरघा।

थक र सेवगजी जाण लियो क वार भाग म टाबर रो मुहडो देखणो नी लिख्योडो। टाबर री उम्मीद म करयोडा उपाया सेवगजी न सफा थका दिया। पूडघा वाघ र जूण पूरी करण न व नियति समझली। सेवगजी र जीवण म कोई काड उच्छाव नी रयो।

दवाखान सू मिलणाळी तिणखा दोवू जणा री दाळ–रोटी न घणी ही। हवेली री झाडू बुहारी रा बीस रुपया महीना व बीडघा किरचा म खच देव। ई सू आग वाने की नी चाइज।

मोटपार हा जद सवगजी फूटर डील डोल रा हा। अब पचास बरसा मे ई बूढा खोखिदर सा दीसण लागग्या। नितूग बीमार रेव अर दवाखान सू मुफ्त री दुआया लेयन खावता रेवै।

सेवगजी रो मन भळे जोर मारण लाग्यो। व सेवगण म हेला

चावतीं । पाडोसी रामनाथ जी आपरी घराळी नै 'केशरियै री मा" कय'र हेलो कर । सेवगजी रा समळा घाव हरा हुयग्या । व सेवगण न कीरी मा कैय'र हेलो कर ।

अचाणचक ई सेवगजी न चूल्है रो चेतो आयग्यो । व जार चूल्हो चेतायो अर तपली चाढी ।

चाय-पत्ती पटडी माथ कागज री अेक खुल्ली पुडिया म पडी ही । सेवगजी वीन सभाळी तद अेकर भळ निूग री बात चेत आयगी । वान लखायो क आज कोई ठाडो कुसूण हुयग्यो है ।

दूध रो बासण मभाळयो । बिलडी सूनवाड रो फायदो उठायगी ही । चाट'र साफ करचोड लाध्यो । सेवगजी न कोफन हुयी । जी म फर पक्की हुयी क आज रो दीन साव कुसूणो है ।

छवट सेवगजी काळी चाय छाण र लाया । सवगण न सारो देयन बठी करी जद, लखाणो जाण कोई जागती ठूठ हुव ।

— 'दुआई लेय ल—आ अग्रेजी दुआई है बेगी ठीक हुय जासी ।" सेवगजी रो जीव गवाही नी देय रयो हो पण व पतियारो दिरावण जड सुर म बोल्यो ।

'सेवगण अणचेत म ही गोळी गटक ली । व वीर सिराथ बठ'र सोचण लागग्या— 'ज हुव, काल इणन पकायत वडोडी असपताळ दिखाय देसू । पण इण सोचण र साग ई अेक सुवाल वार मु हड मामी ऊभ ग्यो— 'पइसा ?" तिणखा तो पला ई अेठ लगाय दी । अर किसी पाछो काल मिल जावला । असपताळ नी पूग्या सेवगण ठीक नी हुय सक । सव गजी उळझण म पडग्या । उधारा लेवण री बात सोची, पण वेगो ई वारो जीव केय दीयो क म्हार सूघपण री बडाई भलाई किती ई हुवा पइसा माग्या ई रो की नी बटेला ।

वार लिलाड म सळ गरा हुयग्या । जीव न जोर देर'र पक्को करयो—"दिनू ग वेगो दवाखाना खोल'र लवणभास्कर चूरण रो ठूगो भर लासू परबारो ई बेई न बेच'र असपताळ पूगण रो भाडियो तो कर ई लेयसू । पछ री पछ डाक्टर केसी ज्यू देखी जासी "

सेवगजी परबसु हुयोड़ा मा बैठ्या हा । तद ई बारणो बाज्यो । उठर बारणो खोल्यो तो देख्यो—बिरजू हो । बिरजू अबार ई काम सीखणनै दवाखान आवणो सरु करयो है । वो सेवगजी रो चेलो है । वीर माठे सुभाव पर सेवगजी हरमेस ई चिड, पण अबार वान वो देवता सो लाग्यो ।

सेवगजी र लार-लार बिरजू आगण म पूग्यो ।

—"आर काइ हुयो ?" माचली म सुती सेवगण न देख'र वो पूछ्यो ।

—'ताव चढग्यो ' सेवगजी अधरसक उत्तर दियो । "तू किया आयो, बोल ।"

—' वदजी काल रोगी देखण ने गाव जासी । अ दुआया भेजी है । मात्रा देख'र पूडया बाधण रा कैया है । म न कया पण हू कय दियो क म न मात्रा रो साची अनाज नी है म्हारो तो पिण्ड छूटग्यो । वो राजी हुयनै बोल्यो ।

—' राखो मल दे ।" सेवगजी सू इतो ई बोलीज्या ।

बिरजू हाथ रो थलो जा'र हबळ स खूटी टाग दियो ।

—'हू जाऊ ?" वो पूछ्यो ।

—"हा" सेवगजी अणवावणा हुयाडा बोल्या ।

बारणो पाछो ढक'र वै पाछा बठग्या । वारो जीव कियाइ हुयग्या—आज म्हासू पूडया का बाधीजै नी " सेवगजी अन निढाळ हुय'र खुदो-खुद सू ई बोल्या ।

सेवगण री हालत घणी बिगडण लागगी ।

सास जोर-जोर सू बाजण लागग्यो । सेवगजी सिराण बठया हा । दिनू म सू पला व काई नी कर सकै हा । वान दिनू म अमपताल सजा'र सेवगण न दिखावणै रै निरच र बार-बार दुरावण र सिवा की नी सूझ रयो हो ।

रात स्यात खासा ढळगी । अधारो ध्यारा बानी पग पसार लिया । अधार म बैठया बैठया ई सवगजी कैई जूनी बाता साम ऊजळी-परर

देव रैया हा । परणीज'र आयनैं सेवगण कडु बैं री अेक बूढी लुगाई रै पगा लागी ही । डोकरी आशीस देवती हरखीज'र बोली—' रामजी महाराज थारो सुआग मोकळो हुव थारो आगणो भरयो भरयो रव बश री वेळ बध "

कठेई कोई उन्दरो बासण पटक दियो । सेवगजी रा सगळा चितराम तड़के रै साग ई छाई–माई हुयग्या । व पाछा वतमान र समच आय ग्या ।

वैं उठ'र खटको करयो । इत्ती जेज अधार म ई बठया हा।

आगणो उचरोडो पडया हो । सेवगण सूती जकी माचली सेवगजी सिनान कर'र गया जदरा आला पडया कपडा, आधी भरयोडी बाल्टी गुडक्योडो डोलियो ।

वारी निजर फिरती फिरती जाय'र खूटी पर अटकगी । खूटी माथ वेदजी रो भेज्योडो थला हो । लखायो जाण थला फटग्यो हुव अर बी माय सू निसर–निसर'र पीड री धुआ सगळ आगण मे बायग्यो है ।

छिणक सोच र सेवगजी उठया । थेला खूटी माथ सू उतार लियो अर जमीन मार्थै दुआया काढण लागग्या । सोच्या—नींद तो इयाई नी लेवणी फेर वेदजी न नेराज क्यू कर ?

सेवगजी कागज बरोबर फाडया अर बठ'र मानावा मिला–मिला र पूडया बाधण लागग्या ।

माचली पर सूती सेवगण रो साम कणाई जोर सू बाजतो अर कणाई वा बेलण लाग जावती । सेवगजी बिचाळ–बिचाळ वीन अेक सेंजारी निजर सू दख लेवता ।

अर काई ठा किण बगत सेवगण न नींद आयगी, अेकदम स्यांत री नींद ।

सेवगजी ओजू पूडया बाध हा । •••

बिरादरी

एक सनाईस री पिरोल खोलर नादिरा माय बडगी। सहदेव माग सू अठ पूगता पूगता वा अपण आप न आळमो सुणन खातर त्यार कर चुकी ही। तावड़ा खासा अबरा हो। नादिरा र पसेवा चू रयो हो। 'बहूजी।" उण डावाड पासाळ कमर र किवाड माय हाथ धरन हलो पाड्यो। एक सनाईस म उण फगत इण कमर रो ई काम ले राख्यो है। दूजी बार हेलो दयन वा कमर री माळकण री रोजीना देख्योडी सूरत चितारण लागगी। बापडी भागवान है। उण सोच्यो।

उमर तो म्हारी भी इत्ती ही हुयगी पण मैं तो जाण सिलोक री मुख्योडी देगची होवू। आखो दिन इण घर सू उण घर कानी रडकणो पड़।

तद ई किवाड खुलग्यो। अळसाई आख्या खोल्या भरवें डील रा बहूजी साम्है उभा हा। नादिरा पल्लो कमर माय दाब्यो अर जाण बहूजी ओळमा दिया उणन कपडा सू भरयोडो टब अर अर सफ साबण लाय दसी एकदम काम करण री आळ मे ऊभगी। पण आ उणरी भूडो आस ही जिणन लगावण री उणरी राज री आदत है। उण सुणो-नादिरा तू आज परू कित्तो मोडी आई है बोल मैं थारी उडीक म बठै ई जावण रो मन लिया हरमेस कर हुयाडी बठी रवू काओ?'

"बहूजी, काओ करती। सहदेव माग बाळा बहूजी मिरचा रा टूका तोडण न बठाण लोवी। नादिरा लडखडावती आवाज म कयो। थारै

ता हरमस अन्ड भाना रव । तू जको काम रा पईसा लेव वा ई करया कर।"
बहूजी वैयर रीस मांय-आपगी अर टज लावण न जावती बडबडावती रेयी—"आदमी नौकर राखै अराम खातर, पण अठ तो उल्टो हाजरी म बैठयो रवणा पड़।

नादिरा रो घणी वार मन हुवै। आ अेक 'बघी' छोड देव। सात घरा रा कपडा धोवता धावता इती गैरी तो होव ई आछा रवतो आ आठवा घर पकडनी ई नी। पण किया नी पकडतो महीणै रा रिपिया तीस बध है नी अर फरू नादिरा र साम्है माच म धामता मोटयार, ममदो-केलियो छारा, नूरकी, जानूडी छोरया ने गोदी म राम जडो छोरो असलम अकेसाग आ जाव। उणर काना माय रोटी रोटी री आवाज न खाली देगची म बाजतो कुडछियो उतर जाव। मेमद र बापू रै गून्डा हेठ पडयो दुवाई को रुक्को फडफडावण लाग जाव अर दुवाई रो दूकानदार उणन कसाई सरीखो चेत आवण लाग। महीण म डेढ सौ रिपिया री ता ममद रा बापू दुवाई खाय जाव तद वा सोच एक नवमो घर भी वध जाव ता आछो रव घण सू घणो असलम नै साग लावणो पडसी।

बहूजी कपडा सू भरयोडो टब साबण अर सफ ल्याय'र धर दियो। नादिरा उठाय र गळियारै म टूटी हेठ लय आई। धोवण खातर कपडा निकाळया तो डील निचोडयो सो जाण पडयो। बहूजी रो परवार छोटो है, कपडा कम हुसी, आ सोचर नादिरा ओ घर पकडयो हो पण कद कद बडी चादरा अर खोळ सामल हुय जाव। जाड कपड री चादरा नी मळीज सक नी सावळ निचाडीज सक। नादिरा गणित लगाव। आ बाळनजोगी डबल चादर दस परण रा कपडा सू बतो खून पीय जाव।

इण टम नादिरा न ममदो चेते आवण लाग। सतरह अठारह बरसा रो है वो। आखा दिन पदडका मारतो फिरबो कर। म्हार साग आवण लाग जाव तो कित्तो स्सारो हुव। नूरकी न लावण लाग जावू पण उणर बापू री धीवना कुण कर धाती री वेळा कुण पीठ पपोल। उणनै सईदा र भाग सू ईरखो हुवण लागग्यो। उणरा छोरो कित्तो स्याणो है। दोनू मा बेटी रळर पन्द्रह घर सळटा लेवै। फगत एकाधी वार ममदो उणर साग आयो हो म्हाट न दो रिपिया रोज चाहीज हू दो रिपिया उणन दयर साग ल्यावू। सनिमो अर सिगरट-यारी चाहीज। केयी केयी वळा तो दारू ई पीय आव। तद नादिरा र आपो नी रव, उणरो झोटो झालन" देखल

थार इण बाप री हालत, आ माय ई घणी जुवानी ही, दारु पीयर मनै ठाक्ना गाळया काढता, पण अबै दारू आन पीयगी। माचै सू विना सायर उठयो ई नी जाव अब मू आर दाइ इण माच माथै सूयजा।"
नादिरा री आख्या माय खून उतर आव। उणरी पीठ माथ मेमदे र बापू री मार रा घाव उपड आवै। ममदे रै बापू कानी ज्यू इ वा देखै उणरो आपो समळन लाग। ममद को बापू–हाडक्या री ढिगली–माचे माथै पड यो आसू ढळका रयो हुव। फरू वा मेंमदे न समझावै—"थारा बापू आछा हुय जाव फरू अे काम करण लागमी। चौरायाळी दूरान तो आपां र कन्जे मे है ही। उम्नरी थार बापू वेच नाखी। पीतल री भारी उम्नरी खरीदणी पडसी। आन ठीक करण अर उम्नरी ल्यावण खातर पईसा चाहीज तू सैर री किणी लोण्डी मे नौकरी अपडल।"

पण मैंमनो उणरी अेक नी सुण। नादिरा टूटी रै कनै पडी रवण वाळी मोगरी ऊचाई अर जाणै खुन्र ई भाग न बूट ही दनादन चादरे माथै मोगरी बरसावण लागगी। चादरे माथै सटा पटक री आवाजा वेगी वेगी अर उतावली उतावली बाजण लागगी। पण की ताळ बाद अचाणचक थमगी।

"नादिरा अे नादिरा, काओ हुयो अे।"

उण लाबै दौर सू नादिरा री आख्या नी जाण कणा खुलती पण माय सू आयर बहूजी उणन दख लीवी। नादिरा कपडा र ढिगल माथ लुढकी पडी ही। बहूजी र पिझोडण पर भी चेतो नी बापर्यो। फरू जद होस आयो तो उणन इत्ता इ चेत आयो क वा आपर मुर्दे सरीर सू दनादन मोगरी बरसाव ही। उणर लिलाड माथ पसेवो आयग्यो।

"काओ हुयो चक्कर आयग्यो हा काओ।" बहूजी रो हाथ उणर काध माथ हो। 'नी नी ईया ई कई बार हुय जावै" कैयर उण धोती र पल्ल सू लिलाड पूछ्यो अर चादर माथ हाथ चलावण लागगी।

"सुण कीं ताळ माय आयज्या।" बहूजी कैयो तो उणन उण आवाज म साचो दिवळास ल्खायो। बहूजी रो आ सभाव ई तो उणन बाध राख्यो है। रीस म किस्तो ई मुरड आयो क्व, पण दूसरा सू किस्तो ई ठीक है। कदई मिरावणा वस्वो ई करा देव। चाय तो घणीज वार पाय देव। पण

कदई उण बहूजी र कमर माय पग नी धरयो। तनखा चाय, कलेवो सँग उणनै चौखट बार ई मिल।

बा बहूजी रै लारै लार चालती चौखट माथ आवता ई ठनकगी। बहूजी माय आवण रो केयो तो उणरा पग उठ्या। कमरै माय पूगता ई जाण बा स्वग म पूगगी हुवै। कूलर री ठंडी हवा उणर चिपचिप, डील न जाणै हुळगो कर नाख्यो। मोटा सो पलग, खुरस्या, रुपाळा परदा। साफ सफाई वाळी अडी भीता न अेड फरनीचर वाळ घर री ता कदई उण सू कल्पना ई नी हुव। इयां वा मोटा मोटा घरा माय कपडा धोवै पण बरामद या स्नानघर सू बघर उणरा पग वठई नी पूग्या।

"बठजा नादिरा।" बहूजी मायर कमर सू बोली। स्यात माय रो कमरो रसोई है। उणन माय री सैंच्या माथ स्टील रा चमचमावता बरतण सजयोडा दीख्या। उण देख्यो बहूजी काच री गिलास पकड्या आय रया है।—"ले ओ नीबू पाणी है, थन लू लागगी है, इणन पीय लै।' उणर नेड पूगता कया।

नादिरा निजर उठायर बहूजी कानी देख्यो। उण सू गिलास अपडी ज्यो नी। की ताळ बहूजी कानी देखर उणरी आख्या माय पाणी आयग्यो।

"अरे ले भई।" बहूजी उणरी हरमेस पाणी म डूबी रवणवाळी कळाई नै लपकर गिलास ताई खेंचली। अर एक अनाखो सवाल बूझ लियो— ' तू इतरो किण र खातर कमावै ?"

अब नादिरा न बहूजी सफा भोळा लखाया। आ ई कोई बूझण री बात है। अपणी औलाद अर खाट म पडय मालयार ताई। पण उणन सौंकी बहूजी न माडर बतावणो पड यो।

"पण अेक बात तो हो सकै है नी।" सुणर बहूजी बोल्या—"तू ओ कपडा धोवण रा काम छोडर कोई और कोई हळको फुळको काम करल तू खुद कमजोर है। किणी दिन माचो अपडलियो तो ? बरतण माजण रो काम करला।"

"नी।" नादिरा सैंमगी।

"क्यू ? इणम थार डील न अणूतो जोर नी पडला, काम ई ज्यादा
कर सकला।'

"नी बहूजी, अडो काम करण रो मत कयो थान नी ठा।"

"काअी हुयो, मैं तन गळत काम बता रयी हूं, जद तू कपडा धो सक
तो बरतण क्यू नी माज सक।'

'कपडा धोवण सू ई म्हारी इज्जत है बहूजी। म्है जात रा धोबी
हा नी। कवता कंवता नादिरा जाणं कठई गमण लागगी। बहूजी री हेसी
सुणर उणरो ध्यान टटयो। वा देख ही बहूजी हस्या ई जाव ही। 'मैं थार
कन सू ई सुण्यो, कपडा धोया सू इज्जत है, बरतण माज्या सू चली जाव।"

"मैं तो माजलू पण।" नादिरा सू वा हेसी सयी नी जाय रयी ही।
दबी दबी सी बोली– म्हारी जात री पचायत मे ठा लाग जाव तो ?"

बहूजी गम्भीर हुवण लागग्या–"तो काई हुवं ?'

'अकर मैं इया कर्‌यो तो तीस नम्बर कोठी वाळी बोली–बरतण भी
साफ कर दिया कर साठ रिपिया देय देसू। हू सोच्यो दो घर री आमदणी
एक माय ई हुय रयी है। मै मानगी। काअी बताऊ बहूजी ठा नी कुण मन
बरतण माजता देख लीवी अर पचायत न ठा चालग्यो। पचा फसलो
कर्यो–तैं धाबण हुयर बरतण माज्या–म्हारी नाक कटवा दी। सौ रिपिया
रो जुर्माना कर नाख्यो। बहूजी म्हार माटयार सू वठयो नी हुयीज पण
उण दिन मन ठोकण ने दौडयो।' कंवता नादिरा री आख्या म आतक
नदी र पार सो चवडो दीखण लागग्यो।

• • •

बडपण

ढाणी मे आज खासी हूळचळ ही ।

जहूर खा दाय दिन पछै सैर मू आयो अर आवता ई त्यारी मे लागग्यो । बदरू न सर भेज्यो । रुक्कै पर नाव लिख र दियो—थरी एक्स रमा जहूर खा न बैम हो क ओ ठर्रा खोर, लाख समझाया पछै ई कठ ई ठर्रो ई नी उठा लाव ।

जहूर खा री नाक आज जाण हाथक ऊची आयगी । वी आपर कूकड़ा खान माय सू दोय सातरा सीक कूकड़ा ई जी मे बाछ'र निरवाळा कर लिया । चार कोस आग अेक ओर ढाणी ही बठ जाय'र इलाबगस नै केय र आयो क आज वीन कूकडा राधण री आपरी कारीगरी दिखावण सारू अवस अवस आवणो है । इलाबगस खेत रै काम न छोड र आवण मे लाचारी बताई जणा वी डाट मार दी, "थारी बिचार लिय थाणदार जी ज कोई ओलमो दियो तो नाँव बता दूला।" इलाबगस न हूकारणो ई पड्यो ।

जहूर खा घडया गिण हो । अर साच हो क आज तो जोर भाग खुल्या । वो सर गयो हा सौदो लावणन । थाणेदारजी साग वीरा कोई घणा भायलाचारा का नी । बस, इयाई ऊजळा राम राम हा । अर अ ऊजळा राम राम करणनै ई थाणै गयो हो ।

"आवो, जहूर खा जी !" थाणेदारजी वीरो स्वागत करयो, "आज किया पधारणा हुयो ?"

"इयाई, आपरा दरसण करणनै,"

"हा, भई, अब म्हे तो दरसण जोगा ई रयग्या "

"किया धष्या ?" जहूर खा थाणेदार जी रै सिरसारै पर गौर देंवता पूछयो

"किया कायरी साव मन्दीवाड़ो है । आ सेतां री एत कांई आव क लोग लडनो ई भूल जाव दारूआळा पइसा ई क नै सू लाग !" थाणेदारजी उदास हुय'र बोल्या।

जहूर खा चुप हुयग्यो। साची केव थाणेदार जी । लोग रोई मे पड़घा है। सेता म निनाण आयोड़ा है। किणन फुरसत है लड'र माथा फुडावण री अर थाणेआळा न दारूआळा पइसा बटावण री !

"तो जहूर खा जी, कोनी काई मामलो थारो निगै मे ?" थाणेदार जी पूछयो।

"नी सा अमन चन है।" जहूर खा न आ चोखी बात बतावता ई खासी उदासी लपट म लय लियो ।

"साची ? '

"आप पधारन देख लो सा।" जहूर खा थाणेदारजी र अचूम नै साच करता केया।

थाणदारजी पाछा नी बोल्या। केई देर सोचता रया । फर हेलो पाड्यो, "अरे, रामप्रसाद ! जीप त्यार है नी ? काल आपा जहूर खा जी गी ढाणी चालसा।' फेर मुड'र जहूर खा न पूछयो, "क्यो जहूर खा जी रोटी पाणी रो बदोबस्त तो हुय जावला ! आयोड़ा रातबासो इ करसा '

"लो धिनभाग म्हारा !" जहूर खा हरखीजतो बोल्यो, "आप पधारो तो सरी।"

"काल अवस आवा ' थाणदारजी मुळक'र केया।

ओ 'काल' आज ई हो।

[

अबै तो टेम ई नडो आपूग्यो हो, जहूर खा घडी देखी पाच बज हो । तद ई काठ, ईजीन रा सरणाटा सुणीज्या । जहूर खा र पगा घूघरा बधग्या ।

ढाणी रा दस बारै झूपडा मे सबन निगै पडगी । आज जहूर खा र अठ हलके रा ख स थाणदारजी ममान है । लोटा ल टा दूध अर घिलोडघा घिल्याडघा घी पूगावण री होड लागगी जाण । जहूर खा र आपर झूपड आग बीसेक गाय डागरा बध्योडा, पण कुण मान ?

थाणेदार जी पूगग्या ।

चा पाणी पियो अर निमटा निमटी करण सारू निकळग्या । साग तीन सिपाही ई हा । जहूर खा माज'र मल्योडा लोटा मे पाणी भर दियो । बदरियै साग सिगरेटा ई मगवाई ही । अक अेक न निरवाळो पेकेट झला दियो ।

झू पडै र लार चूल्हो चेत्याडो । इलाबगस मसाला घोट । जहूर खा रा छाटोडा कूकडा जब छोल्या बघारया पडया हा । बान चूल्है चाढण री देर ।

अठीन थाणेदार जी आव इती दर मे जहूर खा सगळो बदोबस्त कर दियो । झू पड म माचा बिचाळ मुढा धरीजग्या । प्लेटां म भुजिया निमकी अर नड तीन रम री बोतला ई त्यार ।

दिन चिलका सीक रया जणा थाणेदार जी आयग्या ।

जहूर खा अब आप ई आपर ममानां साग बठग्यो । पेल दौर म ई अेक बोतल गिलासा म ढळगी । झू पड म सरूर आपरा पग पसारण लागग्यो ।

"वा भई जहूर खा जी बधा चीज मगवाई है ।" थाणेदारजी गुटको गळ हेट उतार र कैया ।

"सा, आपरी किरपा है ' जहूर खा बोलतां गदगद हुयग्यो ।

वो कल्पना करै हो क केई कोमा लग आ बात फल री हुवला क जहूर खा अर थाणेदार रो साग उठ बठ है । वीरो छाती रय रय'र फूल ही ।

'गाव तो फूटरो है ।" अचाणचक सिपाही रामप्रसाद बोल्यो ।

"सा, गाव नी ढाणी है, आ।" जहूर खा केयो।

'हा, ढाणी ई सई, पण है फूटरी क्यो साब !" अेक दूजा सिपाही, जक रो नाव जहूर खा न निग नी हा, थाणेदारजी न पूछ्यो।

'हा, जहूर खा जी ! रात बास रो काई बदोबस्त है ?' थाणेदारजी जहूर खा ने पूछयो।

'किया हुकम ! माचा घणा ई है, ढळवा देवूला।'

"अरे ! जहूर खा आतो म्हान ई निगे है क माचा घणाई है। माचा तो थाणे म ई घणा ई है " थाणेदारजी पाछा बोल्या।

जहूर खा रै की समझ मे नी ढूकी। वो चुप रयग्या।

"थाणेदारजी पूछ ज्या रा बताआ !" अबकै रामप्रसाद रो सुर की करडो नीक्ळ्यो।

अब सरूर स्यात झूपड मे चाखी तर पसरग्यो हो।

'साग सोवण रा काइ बदाबस्त है ? थाणेदारजी नै अेकला नीद नी आव।" सिपाही बाल्यो।

जहूर खा री जीभ ताळव र चिपगी।

इण रा बदावस्त वा नी कर्या हो। ढाणी रो अेक अेक जनाना चेरा जहूर खा री आंख्या आग फिरग्यो, पण निजर किण पर ई नी ठरी। पाच घर सा वीर आपर ई कड़ुबे रा अर बाकी दूजी जातआलां रा फेर थाणेदारजी नै नी आव जद सिपाया नै किसी अेकला नीद आय जावला !

"कांओ सोचण लागग्या जहूर खा जी ?" थाणेदारजी पूछयो।

'सा काई बताव़ू ! साग सावण री ता काई तजबीज नी बठा सकू।' जहूर खा सोचतां-सोचतां जबाब दियो।

"अेक रो ई नी ?' रामप्रसाद साफ पूछयो।

"कि न लाऊ, बताआ ' जहूर खा र छाती ऊपर सिला प जाण।

"थारी घरवाळी कठै !" थाणेदारजी काई ठा काई सोच'र पूछ्यो।

जहूर खा री छाती म करीड-सो बोल्यो । पण पट म धुळधाड ज'र नै उल्टी कर र काढण सारू गळो नी खुल्यो । "हुकम, राटी त्यार हुयगी हुवैला निग करू !" केय'र जहूर खा तीसरी बोतळ र आधोट ई उठग्यो ।

बार निकळता वीरै कान मे सिपाही रामप्रसाद री आवाज पडी। "लो, साब थांर जहूर खा रो मुहडा खारो हुयग्यो दीस मीठो कर दिया !"

ला टेन र उजास म कटोरयां सू उठती भाप दीस ही। इत्ती देर री रसी बसी बास न रध्योड कूकडे री सौरम स्यात धक्का देय'र काढ दीवी।

थाणेदारजी धिगाण आंख्या खोल खोल र चौफेर दख हा अर वांर चेर री खाल अकरासीजगी ही। जहूर खां तीन-चार दफ हुकम, अरोगो केय चुक्यो पण थाणेदार जी जीमणो सरू नी करयो हो। लार रामप्रसाद अर बिना नाव रो सिपाही ई हाथ खींच्यां।

"जहूर खा ! अचाणचक थाणदारजी थूक उछाळता बोल्या, कटोरयां मे काई है ?'

'हुकम, आपर अरोगण सारू कूकडो खास तौर सू "

"कूकडो !"

"हा, हुकम ?"

"अच्छया ? इण कूकडै नै बाढयो कुण ?"

"मैं ई बाढ्यो ' जहूर खा न ओ सवाल साव ओळ पचोळ लखायो, पण वी जवाब देय दियो ।

"जहूर खा, कूकडो तू बाढयो । आ बात तू म्हार सामी हाकर्यो है। इणरो अरथ हुयो क तू कूकड रो कतल करयो है ।'

'कांई केवो हुकम ! '

"अरे ! हुक्म बडग्यो गधी री गा तू बता, कूकड रो कतल हुयो या नी ?"

"रामप्रसाद, दरज कर चश्मदीद गवाह मैं आप हू अर गिरफ्तार कर इण मियें न। भेण चो कतल कर ?" थाणेदार जी दड़ूक्या।

'सरकार !"

"चुप, मर सरकार री मा रामप्रसाद, डडो कठ म्हारो ?"

जहूर खा बगनो हुयोडो सीक थाणेदारजी रै सामी देखै। थाणेदारजी री आख्या मीचीज। जहूर खा फेर बोल, हुकम, परोस्योडो ठडो हुव, पैला आप रोटी तो अरोग लो "

"नी, पैला रिपोट दरज हुवला, थारो चलाण हुवला।" थाणेदारजी आख्या खोलता बोल्या, 'रामप्रसाद बता इणनै कतल रो मामलो रफा-दफा किया हुव ? पूछ इणनै, ओ काई चावै ?"

इण ठौड पूग'र आप इण कहाणी रै बारै मे काई सोचो ? जहूर खा कूकड री कतल रो मामलो दोय हजार रिपिया मे दबाय दियो ? हा आप ठीक ई सोचा।

थाणेदारजी वी ई कूकड नै जीम र रात भर अेकला सूत्या रैया। दिनूगे चार गया पछ जहूर खा न हाणफाण ताव चढग्यो।

● ● ●

मालचन्द तिवाडी

जन्म 19 मार्च, 1958 (बीकानेर)

शिक्षा एम ए (हिन्दी)

पोथी

'भोलावण' उपन्यास।

माग साग हिन्दी मे लिखणो । कोई तीस कहाणिया पत्र पत्रिकावा मे ।

'शिखर', 'सा हिन्दुस्तान' अर 'सारिका' री कहाणी प्रतियोगितावा मे पुरस्कार।

अवार

शिक्षा विभाग, राजस्थान म ।

ठिकाणो

पो श्री डूगरगढ, राज

पिनकोड–331803